मंगल बखानत सारहे अक्षर सबन के धार हे सो आतमा नरि-धार हे यकभाव जोन द्विभाव हे १९८ जो जान अक्षर भाय की रसना बिना गुण गाय सो आतम प्रकट दरशाय जो दृढ़ सुमति के आधीनहै। भूलै न माया जालसो देखैसबी जग ख्याल सो करि योग बिधिकछु काल सो निज आतमा में लीनहै॥ सबकोनयह उपदेशिये उरज्ञानदीपक लेसिये चीन्हिय बिदेशी देशिये तपजाप रत कि मलीनहै । मंगल चुपकि घर बैठिये शुचिज्ञान मंदिर पैठिये मति शुद्धबिनुनहिं होतयह कृत परमहंस प्रबीनहै १९९॥सवैया॥ श्रीमुनि व्यास पुराण किये सब द्वापरमें कबिकोबिदगावैं। सत्ययुगादिकमें न पुराण कथा इतिहास मनुष्य बतावैं ॥ तौ द्विजराज पुराण बिना मृतकर्म कहौ किमि लोग करावैं। मंगल अद्भुत दंतकथा नहिं बूझनहार के बैनन भावैं २०० देखिय दृष्टि पसारि दशौ दिशि नश्वरही सबु देतदिखाई। जो अविनाश स्वरूप न ताकर है सबमें गति शब्द सुनाई॥ मौन रहौ सब और कहौ जनिठौर न ठौरबड़ी प्रभुताई। मंगल आपन आपुन जानत खोजत ईश्वरहै अधमाई २०१ ब्रह्मबिहाय न देखिय कारण कारण रूप बिचारिय माया। माया बिहीन न ब्रह्म बिचारक जानत ज्ञानधनी शुचिकाया॥ दोउन में नहिं अन्तर भाषत कोबिद ज्यों तरु औ तरुछाया। मंगल बूझिपरै न बिना गुरु कोउ मिलै न दुराय दुराया २०२ केतिक कल्पगये भवभ्रामिक आपन धाम न पाव सुखासन। योनि कुयोनि सुयोनि फिर्‌यो अबऊरधकी पकरेमन आसन॥ जानि न जात गली निज धाम कि सत्य असत्य कि बाणि दुरासन। मंगल राम कथा कछु जानत मानतहैं नहिं पूरण बासन २०३ पाखँडको तन बेष बनावत बातन में निजबोध करावैं। आपनि बुद्धिभस्यो न कबौं गुरु आननको नितसीख सिखावैं॥ मोह मयी मतिहै अपनी बहु लोगनको निरमोह जनावै। मंगल ढोल समान कहौ तेहि शब्द बड़ो उर खोखलखावै २०४

जाकहँ नेकहुज्ञानप्रबोधहै सो न मिलै हितसों हितकारी। द्वैत कि बुद्धि लगी मनमूरुख को निरबाण बिलास बिचारी॥ संभ्रम बोध दुवौ उरमें अपने चित कौन कहै बिधिचारी। मंगल चौरन साधुबखानिय जो नहिं जीवनलेत उबारी २०५ राम नहीं तबरामजपैं सबहै प्रहलाद कथा परमाना। जानियराम अनादि कृपानिधि बेदपुराण ब्रिबेक बखाना॥ राममुये नितराम रहे मग लोगनके शुचि आवतध्याना। मंगल बूझबड़ी लघुनाहिन आगिल पाछिल होत समाना २०६ बिष्णु सतोगुण रूप बखानत होय त्रिबिक्रम यज्ञ नशायो। नाहिं सतोगुण में छल चाहिय नारदको कपिरूप बनायो॥ बाम जलंधरको ब्रतघालि वधो सुर भानु सुधा जब पायो। मंगल का कहिये रचिये चुप सत्य असत्य न जात गनायो २०७ शंकर रूप तमोगुण गावत योग समाधि बसैं बहुकाला। जानत ज्ञानसुधी समता अरु वेषबिबेक धरे गतजाला॥ देत अभिप्रियदान सबै भवदान दया बिनुको प्रतिपाला। मंगल मौनरहौ दुबिधा यह सत्यक तामस में कृतख्याला २०८ जो पुरुषोत्तम सो जनु भानु है घाम समान गुणो त्यहि माया। घाम बिप्रेरबि देखि परै बिनु घाम न पूषण को लखिपाया॥ सूरज हीन न घाम बिलोकिय जो घन मध्यतौ दोउ छपाया। मंगल सो भ्रममोह कहैं त्यहिजीव सदृष्टि निरक्ष बनाया २०९ ज्योंजलमें चिकनाहट देखिय कोटि मथे नहिं आवत हाथै। त्यों यहजीव बिहाय शरीरन नैनबिलोकिय ज्ञान कि गाथै॥ ब्रह्म अपूरबबस्तु न भाषियमानिय सांच न झूंठ न साथै। मंगलतूकिबिमूढ़बड़ो क्यहिनाथ बखानत जानि अनाथै २१० ज्ञान कहै सबमें हरि भाषत ज्ञान कहै सबही बिधिन्यारा। शून्य समान दई उपमा अवबोध भयो कि अबोध बिचारा॥ नाक अहै जड़ चेतन नाहिन ह्यांजड़ ते तन चेतन धारा। मंगल ज्ञान गुणे उरमें भ्रम ज्ञान बिहीनमहा अंधियारा २११॥ कबित्त॥ मुसलमान बेचून

बतावें हिन्दूकहैं अनूपाहै। दोनौंथके खोजते भाई किया किसो न निरूपाहै॥ चित्र बिचित्र कहैं गूनागूं मध्य में छांह कि धूपा है। मंगल है कहने की नाहीं रूप बिना बहुरूपाहै २१२ बंदें कबीर कमलमें संपुटसत्य पुरुष अनमायाहै। सो विज्ञानरूपथौं तत्पद चतुरमहामति गायाहै॥ सत्यलोक में शुद्ध सतोगुण असि पदलीन कहायाहै। जहँलगु रूपहोयनहिं असिपद मंगल रूप न आयाहै २१३ त्यहिथल बसत हंसबहुतेरे दरशि परशि सुख पातेहैं। अमृतभषै पुरुष अरु नारी उर अनुराग बढ़ातेहैं॥ सत्य नाम प्राटक तहँसोहैं पापरूप नहिं जातेहैं। मंगल तौन होय बहु असिपद पक्षापक्ष लखातेहैं २२४ हंसहंसिनी द्विविधि बतावैं निज निज मुख आनन्देहैं। भिन्नभिन्न गृहसकल बिलासी पुरुष चरण तितबन्देहैं॥ क्षुधाविवश अमृत आहारी माया मोह निकन्देहैं। मंगल अभय बपुष जीवनको क्योंकरिकहत स्वछन्दे हैं २१५ कहत कबीर पायअनुशासन हम जगजीव चितातेहैं। पलटिजाय भवकथा मनोहर ताकहँ सुरुचि सुनातेहैं॥ बिधि निषेधको दाता ठहरा सुखसागर सब मातेहैं। मंगल तत्पदही यह कहिये असिपद कहां लखाते हैं २१६ जहँलगि सुख दुख रूप अनूपा ज्ञान बिबेकबतावैजू। लोकअलोक हंस औ हंसिनि अमृत बिषदरशावैजू॥ तहँलगुमाया मोह बखानिय क्यों अपनेमन भावैजू। मंगल समुझिबूझि गहु सांची द्विविधा ध्यान न आवैजू २१७ सत्य असत्य लोक कोउ कहिये दुबिधा भ्रम बिज्ञानीहै। सत्य लोकमें बसत हंस सब काग असत्य प्रमानी है॥ जीवहि खात काल यमरूपी जो पुरुषोत्तम ज्ञानीहै। मंगल महा कुचित की कथनी अपनी अपनी मानीहै २१८ शब्द मृदंग बांधि यमराजा तुरत नरक में डाराहै। रोवत शब्द नर्क में बहुबिधि पुरुष हुकुम शिरधाराहै॥ तबकबीर करि महा परिश्रम शब्दहि जाय उबाराहै। मंगल सुजन बिबेकीदेखैं सत्य असत्य बिचाराहै २१९ एक नगत रजतमके आगे शुद्धसतो-

गुण जानाहै। एकन ज्योति आदिकरिगाई एकन प्रणवबखाना
है॥ एकन बयो पुरुष अबिनाशी दियाजीव परवानाहै। मंग-
ल एकशून्यपद अटकेसत्य असत्य गुमानाहै २२० ॥ सवैया ॥
एक बिराट स्वरूपबदैं यक अक्षरमें लवलाय रहेहैं। एकनिर-
क्षर रूप बखानत एक समाधि समान गहेहैं॥ शक्तिहि एक
बदैं शिवरूपहि बिष्णुमयी यक योग दहेहैं। मंगल एकबदैंदश
रूपहि सत्य असत्य दुवौ निबहेहैं २२१ एककहैं जगदादिअ-
नादि महा भ्रममें यकचौबिस गावैं। एकलगे सबौंग बिचारहि
एक सुरोदय ज्ञान बतावैं॥ ज्योतिषको यकतारबतावत एक
ते जीवनि रूप लखावैं। मंगल एक कहैं सब ठामन आपुन
आपनमें चितलावैं २२२ एकभणैं हरिरूप मनोहर एकअरूप
गुणैंचितमाहीं। एक अकथ्य बताय कथैं फिर एक कहैं अज
जन्मतआहीं॥ एक बदैं हमहीं परमातम एकते आपहि जा-
नत नाहीं। मंगलजाहि न जानिसकें बुध ताकहँ खोजनमूरुख
जाहीं २२३ जाकर रूप अरूप बदैं मुनिधाम अधामकहैं कबि
ज्ञानी। हैनअहै सब ठामन ठामहिं देवअदेवकिये रुचिमानी॥
पण्डित नाहि न मूरुखनिर्गुण औ नहिं सगुणमानअमानी।
मंगलदेखु बिचारिहृदय निज ताकहँलोगकथैं अनुमानी २२४
जाथल बासकरै परमातम वाथलभानु निशाकर नाहीं। बाणि
बिधान न बेदकितेब न ज्ञान बिबेकन हंस लखाहीं॥ चेतन
बुद्धिनहै मन चित्त अहंकृत औ अनुमान न ताहीं। मंगल वा-
थल जाइ न आवत बुन्दसमुद्रहि जाइ समाहीं २२५ देवन
कोन स्वभावलिये प्रभु दैत्यनकी नहिं पद्धति लेखी। नागमनु-
ष्यन कीट पतंगनहीं खग खेचर चालि बिशेखी॥ तत्त्वबिबेक
नहीं गुण तीनिहुं ना अजपा सजपामतिदेखी। मंगल केवल
आप न दूसर सो किमि गावत भूतलरेखी २२६ योगकियेसु-
बियोगहि आवत रागबिहीन सुरागहि सोहै। कर्म प्रचारक कर्म
न बंधित धर्मनते अनुप्रास बिमोहै॥ ज्ञानिनके अनुमान लगै

अरु ध्यानिनके उर मूरति जो है । मंगलयज्ञ शिखीमुख सोहत
सत्य असत्य दुवोयककोहै २२७ ज्यों वलयकृतमें नहिंआदि न
अन्त अखानिसके कबिकोई । उत्तर दक्षिणता मधि नाहिंन ज्यों
ध्रुवधाम कहेदृढ़ होई ॥ कीटिन बार भ्रमै चहुँ ओरनि सोमन
पायतके दुख जोई । मंगल बैठिरहो अपने घर आदि अनादिन
जात कथोई २२८ रामनहैं बिनु राम रमैनहिं कामनसो बिनु
काम न जावै । रूपनहीं बिनु रूपको गावत भूपनहै तो प्रजाको
कहावै ॥ सिद्धिनहै बिनु सिद्धि कि सांख्यक वृद्धि न है तम क्यों
बढ़ि जावै । मंगल ज्ञानगहै दृढ़कै फिरि पूंछि बताइ चुपाइ चु-
पावै २२६ ज्यों यक नाक कटाय बनैंमुनि ब्रह्म कि मूरतिनैन
लखावैं । आनहुंमूढ़नकै गुरुता कह मोहमयी मनमें पछितावैं ॥
सत्य असत्य न भाषि सकैं सभकी दिशि तर्जनि आपु उठावैं ।
मंगल त्यों अबआपन हाल जौं लोककहैं सोकथैं औकथावैं२३०
मच्छ कहेभ्रम कच्छ कहे दुख शूकर औ नरसिंह न भावैं । बा-
मनमेंछल क्यों भृगुनन्दन क्रोधतुराम अगम्य गनावैं ॥ श्याम
बदेरस ओध भखे त्रल कल्किकथ दुबिधा न दुरावैं । मंगल सत्य
वृथो अयतार सुशून्यतेहैं किन बांक भ्रमावैं २३१ देखि पिपील
निकेत नृपालको आपन चित्तकरै अनुमाना । कोअन जीव जो
याहि बनावत आपुहि आपुभयो निरमाना ॥ भूमि अकाश बि-
लोकि तथा बुधजैनबदैं कि अनादि अजाना । मंगलक्यों उनको
समुझावत अंध सुरंगति क्यों पहिचाना २३२ कर्मनको फलदा-
यक नाहिंनतौ फिरि कर्म वृथा जगमाहीं । जोपै कहौफलकर्मको
कर्महिं देवलजीवहिंहैं सबठाहीं ॥ तौं नहिंज्ञान अज्ञानबदैं व्य-
भिचारिन आपनि नाक कटाहीं । मंगल जोन महीपति तौकिमि
हंतक फांसिचढ़ै मरि जाहीं २३३ आपन धर्मजो त्यागिगहे पर
ताकर बात न मानिय भाई । ज्यों तजि आपने आन गहो तिमि
सो परित्यागिकै आन गहाई ॥ नारि पतिव्रत त्यागि यथारत
आनहिं तौ फिरि सत्य गमाई । मंगल आपन धर्म सुधन्यअगार

बिधानगहे भ्रमताई २३४ सारअसार बिचार भली बिधि कीजिय कर्म सुकर्म बिकर्मैं । सज्जन सम्पति ज्ञान विवेकगहै शुचि धर्म स्वधर्म बिधर्मैं ॥ मूढ़मता न सुनैंकबहूंन कुपंथ कुघातमेंमानिय मर्मैं । मंगलसंत समाज बिना बुधि उत्तम होत न कोटिकुभमैं २३५ मूरुख को नहिं बीज गहाइय पात दिखायके फूल लखाइय । शाखचिन्हाय बतावैफलै त्यहिको पुनि स्वाद अस्वाद चखाइय ॥ मूल सुझाइके बीज कथा कहि ऊपरकेसब अंगदुराइय । केवल बीज दृढ़ाइय मंगल तौ जनु उत्तम ज्ञान गुनाइय २३६ तीरथ औ ब्रतनेम अचार सबै करिकै जब थाक गुमानी । ढूँढ़तहै तब सार असारहि ध्यावत राम सदा रुचिमानी ॥ मोह दुराय गलीगहि ज्ञान कि मुक्ति पदारथ यांचतज्ञानी । मंगलमुक्ति अमुक्ति दुवौ तजि आपनको तब बूझत प्रानी २३७ जासन इंद्रिनको सुखहोवत तासन प्रीतिभली मनजोरै । जानत यासम आनन दूसर प्रेम गलीमिलि ज्ञानहिं तोरै ॥ जा प्रभुने तन औ मन बुद्धि दिये त्यहिके सँग लावत खोरै । मंगल ताहिते अन्त समय दुख भंग्य महाअघमें चितबोरै २३८ काम बिहारमें भो मन लज्जित केतिकबार अजौं न तजैरे । मादकता मदकी उतरे पछिताय बहोरि सुराहि सजैरे । चन्द्रकुबेर सुरर्षि सकौशिकऔ न कबीर कथाते लजैरे ॥ मंगल का कहिये मन तोसन भोगकि चाह न राम भजैरे २३९ क्रोध कि आगि जर्‌यो बहुधा पुनि ताहितमें अनहेत न ठानै । राम महेश धनुर्द्धरकी गति जानि नतू उर ज्ञानहिं आनै ॥ या खलके सँगहोत अधोगति लांछनतेनबचै अनुमानै । मंगलयोचि अजौं तजि क्रोधहि श्यामस्वरूपहिकोकरुणानै २४० त्यागिके लोभ दुराय दुधा भजिले निजआतम आनँदखानी । बालिसुयोधनऔनलकीगति बूझिचलै नलहैकछुहानी ॥ पंडितज्ञान निधान तपेश्वर लोभहि हेरिडरैं सबप्रानी । मंगल क्योंसमुझै अपनीमति अस्थिकि सूखचचोरतश्वानी २४१ मोहमहा रिपुयातनमें निबसै न बिलोकतमोमनकूरा । आपनि

आपनि भाषतहैं सुतनारिसवै भवधाम अधूरा॥ अन्तन आपनि देह बिचारिय संगिनि तौ यह झूंठ गरूरा। मंगल चेति अजौं भजु आतम राम प्रतापसदा भरिपूरा २४२ एकहि ईश्वरमय जग देखिय एकहि शक्ति बनावन हारी। एकहि सूरप्रकाशकरैं दिन एकनिशाकर रैनि उज्यारी॥ एकहि कालभरा सब ठामन एकहि नाम कि पद्धति प्यारी। एकहि रूप अरूपसो एकहि मंगल दूसर कौन प्रचारी २४३॥ कुण्डलिया॥ मायाब्रह्म बिचारिये ईश्वर जीव प्रमान। चन्द्र सूर दिन रैनि बुध अबुध अचेत न ज्ञान॥ अबुध अचेतन ज्ञानपाप अरु पुण्य कहावै। आवागमन बिबेक मोह जीवन मृतु भावै॥ मंगल सेवक साह निधन धनवन्त बनाया। देव दैत्य गुरु शिष्य दुबिधि रचिराखे माया २४४ कीन्हें त्रैगुण देव श्रुति तीनि काल गंदमान। त्रैसन्ध्या त्रैलोक पुनि तत्त्वमसी त्रैज्ञान॥ तत्त्वमसी त्रैज्ञान राम त्रैरूप लखावा। तीनिचरण ओंकार तीनि तापन तन तावा॥ मंगल त्रैसिद्धान्त तीनिकबि काव्यहिलीन्हें। तीनि देहभ्रमि जीवत्रिना कृत आतम कीन्हें २४५॥ षटपद॥ चारि वर्ण बिस्तार चारि आश्रम श्रुतिचारी। चारिकिये उपवेद तत्त्व चारिय निरधारी॥ चारि चरण शुभधर्म चारियुग मुक्तिबखानी। साधन चारि बिचारिअवस्था दिशिहरि पानी॥ अरु बिरंचिके चारि मुखमुनिसनकादिक चारि गनु। शुचि मंगलमनगति चारि कहि चारि चतुर भ्रममध्य भनु २४६ पांच तत्त्वनिरधार कोष पुनि पांचगनाये। ज्ञानेन्द्रिय बदु पांच प्राण कर्मेन्द्रियगाये॥ मोहादिक पुनिपांच अवस्था पांचबखानी। बर्णबर्गलखु पांचध्याय सरशसुमानी॥ पुनि पंच बदन शिवरूप कहि जोशैवी ध्यावत सहित। मंगल बिचारु सबपंच मति मायामोहसमान चित २४७ शिव सुत मुखषटलोक राग षटजानु बिकारा। बेद अंग षट होत सुरस षट आगम धारा॥ षटपद शब्द अभंगयथा षटउर्मी जानिय। बिप्र करहिं षटकर्म दिशाषट सुमति बखानिय॥ बदु प्रीति

भांति षट सुकुल षट षट समाधि भूकाजगत। पुनिषट चक्रनके माहिं परिऊरधको अघकोखगत २४८ सप्तद्वीप बिस्तार स्वर्ग लखु सप्तसुहाये। सप्तसिन्धु आवर्त्त सप्त पाताल बनाये॥ सप्त ऋषय परिवार सप्त दिन भूमि कहैं सब। सप्तपुरीबिख्यात सप्त रामायणहैं अब॥ अरु राज्य अंगसुर युद्ध भणि सप्त बायुसुरपुर कहिय। सबईति भीति अरु अप्सरासप्तावर्णन सुखलहिय २४६ अष्टकुरी पवनारि अष्टबसु कहिय सुजाना। अष्टदिशा गृहहोत अष्टभैरव अनुमाना॥ अष्टप्रहर दिनरैनि धातपुनि अष्टबतावैं। कृतप्रमाण अष्टांग अष्टसिधि करतललावैं॥ अरुसाधि योग अ-ष्टांगबुध बैठि रहत समधीय ह्वै। कब सथिर होत मनमीव ते ब्रह्मभक्ति गावत नहै २५० देहद्वार नवजानु भूमिनवखण्ड बि-चारिय। नव नाड़ी बिख्यात रत्न नवगृह नव धारिय॥ नवरस बिदित जहान काव्य कबि जाहिं भुलाने। निधि नवबश्य कुबेर सन्त जन त्यहि न लुभाने॥ करिभक्ति भांतिनव भजनबुधनिज आतमको उद्धरत। बिनु बोधभये मंगल सुमति अध ऊरध डग मग फिरत २५१ दशम शून्य बिस्तार अङ्कयुत दशगुण होई। अङ्क रहित भ्रमरूप बरणितक बिबुधनकोई॥ तहांपुरुषसिद्धान्त कहत अबिचल बिज्ञानी। कथों बोधैं मम बुद्धि एक नहिं शून्य प्रमानी॥ अरु तजि नवाङ्क भ्रमजाल सब शून्य स्वपद हरैंचतुर। ह्वै जाय शून्य मंगल कही पलटि कहैको झूंठफुर २५२ एका-दश पुनि किये एकधरि शून्य सुधामा। द्वादशादि अधिकारयथा क्रम रचि अभिरामा॥ शत सहस्र लक्षादि किये बिस्तृत संसा री। है सबको सिद्धान्त एक इत शून्य समहारी॥ सो जानि चतुर तजि भूल भ्रम प्रथम शून्य पुनि एक गहि। द्वै तीनि चारि षटपट द्विरस गज नवमंगल सुगम लहि२५३॥ सवैया॥ कोउ कहै नवभांति भजौ अरु योग करौ गज अंग सुहावा। सातहुसर्गकेपारखदें षटरागबदें शरतत्व लखावा॥ चारि सुमुक्ति दृढ़ावत एकभखै गुणतीनि दुपक्षसुनावा। एकसनातनब्रह्मबता-

वत मंगल शून्यकथा फब गावा २५४ शून्य बिना दश्रगुणयन्न
अङ्कन अङ्कबिना कछु शून्य प्रमाना। दोउनमें निरधारन देखिय
क्यों अब भाषिय ज्ञान अजाना॥ शून्य बिचारत नास्तिकहोव-
त एक सुनावत द्वैतमहाना। मंगल काहि बुझायकहै अपने मन
की मनमें अनुमाना २५५ पांचहु तत्व नथें गुणतीनिहुं शब्दस्व-
रूप मिलैंलो मकारा। नाभि मकार उकारमिलै नभिअर्द्ध उका-
र अकार बिहारा॥ अर्द्ध अकार भई पुनि शून्यसो पूरुषके तन
बास बिचारा। मंगलसोप्रभु आदि अनादिहै दूसरताहिन जानन
हारा २५६ संतसबै अनुमानि बदैं अरुबेद कितेव थके गुण
गाई। सोकिमि जानितकै खल तूमन भाषि अनेकन पंथकथा-
ई॥ सत्य सबै नअसत्य अखानिय आपन आपहिते गति पाई।
मंगल दूसरनेह असारथ अद्भुत ज्ञानकथा सरसाई २५७ ज्ञान
गुणे निरधारनहीं अरु ध्यानधरे नहिं देत दिखाई। पूजनमें नहिं
रूप बिलोकिय तीरथमें जलही जलभाई॥ पाठनमें कबिबाणि
भरी ब्रतमाहिं सताव क्षुधा दुखदाई। मंगल मौनरहौ अपनेघर
नामकहौ जोचहौ दृढ़ताई २५८ जापिथके अजपा कितनेबहुपूर-
ककुंभक रेवक थाके। शून्य बताइ थकेखल केतिक एकअखानि
थके श्रुतियाके॥ जोति बिचारिथके यकहै बिधि शंभु गिरापति
कंत रमाके। मंगल थाकि कथा कथिकेतिक अन्न पाके गह्योपद
काके २५९ अपवहै जो बिलोकु पछारिय आपुवहैनत भूल कहा
है। देखतजोन स्वरूपनआंधर ज्ञानगुणै अगुणीहुमहाहै॥ है अरु
नाहिंकहै बड़िचूक नो हैअरुनाहिंके मध्य रहाहै। मंगलरूपअनूप
स्वजीवहि हैअरु नाहिं दुचौन गहाहै २६० सिद्ध समाधि लगाइ
रहे चुपयोग यती करियोग चुपाने। देवअदेव बिचारिथके मुनि
कोबिद बेदबिधानबखाने॥ गाइचुपेकितनेकबिउत्तमजंगमसेवड़
बौध थकाने। मंगल जाहिन भाषि सके शिव ताहि लखावत पा-
खँडसाने २६१ दृष्टि उठाय बिलोकिय जादिशि तादिशि में भर
पूरिरहाहै। रूपअनेक अपारस्वभावन आनहिं आन बिचारगहाहै॥

नाम चराचर भेदनभावत द्वेष अद्वेष बिहाय कहाहैं। मंगल द्वेष अद्वेष किआपु करावतहै निजतंत्र लहाहैं २६२ आपुवहै कमलासन औशिव बिष्णुवहै नद्वितीय बिचारिय। सर्ग सहस्थिति नाश करै गुणतीनि बनाइ त्रिदेव स्वकारिय॥ आपुगुणेतर सत्यप्रकाशक दूतरकोन बिलास निहारिय। मंगल सोपुरुषोत्तम अद्भुत आपन चित्त स्वरूप सम्हारिय २६३ आपुबनावत पालत मारत दोषनहै जिमि होत किसाना। खेतहिजोति बिया शुचिबोवत जामत सींचि निकावत स्याना॥ पाकत काटत पीसत खावत दोषनहीं ककुबेदबखाना। मंगल जोनर काट द्वितीय सु चोरमहाजन मारिय प्राना २६४ एककहैं जलपै महिज्यों बुधक्षीरके ऊपर होत मलाई। कोउभणै ध्रुवअंड समानहै घूमतहै क्षणना ठहराई॥ एकवदैं जनु पाटबिछी यकवादतहैं अचला दृढ़ताई। मंगल गोअहि शीशधरै यक बायुगहेडु बिधानमिटाई २६५एकनके मत भानु निशाकर देवबड़े नित पूजनठानैं। एकनकेचित लोक प्रकाशित खेचर पूरणज्ञान बखानैं॥ दीपवदैं यकहैं नभके यक अद्भुत कारणको अनुमानैं। मंगल नैन बिलोकिन जानत ईश्वरकी गति क्योंपहिंचानैं २६६ जायछपैं अस्ताचल सूर उदय उदयागिरि होत प्रभातैं। एकगुणैं महिउत्तर जाइके प्राचि प्रकाशत आइ सोप्रातैं॥ घूमतहैमहिसूरनडोलत होतदिवानिशि एककहातैं।मंगलभूल लखेउर आवत जानतको परमातम बातैं २६७ एकगुणौ शशि राहुग्रसै जबदेव सहायकरैं तबआई। एक कहैं महिमध्यदिनेशनिशापतिके स्यहिकी परछाईं॥एक चुपाइरहे अपनेघर भाषिकहैं हरिकी प्रभुताई। मंगलदेखत सोनहिं जानत क्योंपरमातम देतलखाई२६८सत्य दयानिधिदृष्टिसमानबिलोकत पालत साधु असाधू। कर्मबशी भवजीवन चेतत ऊसरभूमि अलस्य बिषाधू॥मेघदियो जलऊपरमें उपजाउमहीयकको अपराधू। मंगलकर्मस्वभावनकी फलदुःखअदुःख तरीनअगाधू२६९ रामवहै सब ठामवहै गुणग्रामवहै अगुणी पुनिसोई। लोकवहै

जुअलोकवहै निरबाणवहै मुनिबाणकथोई ॥ तत्त्ववहै सतसत्य वहै जुगुरुत्त्ववहै लघुतान बड़ोई। मंगलजोकछु भाषिकहौ यक आपुरम्यो नहिं दूसरकोई २७० कोटिन आकृति भांडधरै रबि सन्मुख धूपपरै तिनमाहीं। जोजसि आकृति तामधि सोतिमि भिन्नअभिन्न मिले अरुनाहीं॥ त्योंजस मूरतिहै तसजीवहु टेढ़ कुडौल सुडौल लखाहीं। मंगल अंतटरै भड़वायक रूपन दूसर की परछाहीं २७१ जेतिक भांडधरै भरिनीर बिभाकर सन्मुख जायनिहारै। गोल त्रिकोण चतुर्भुज टेढ़में बिम्बप्रभानिधि एक प्रकारै॥ त्योंबहुंखानि बिराजत जीवसो एकहिभावकबीश पुकारै। मंगल अंतन द्वैतकछू इतविप्र चंडारक्रिया गुणधारै २७२ ब्राह्मण शूद्रइतै निजभाव उतैकछु जातिन पांति अहैरे। वर्णगुमान वृथाउरमें लघुता गुरुता शुभकर्म बहैरे॥ दोष कलेवरको नहिंजीवहि क्योंभ्रमरूप अपार सहैरे। मंगल नीच कुलीनतुहीं बड़मूरुखसो जोद्वितीय कहैरे२७३ सुनुविरंचिके चारिभये यक ब्राह्मण क्षत्रिय दूसरगावैं। तीसरवैश्य जुशूद्र चतुर्थ महा अनुमान सुनेमनआवैं॥ ज्ञान विवेकके चक्षु बिलोकत चारिहुएकहि पिंडदृढ़ावैं। मंगल लोगन मानिलियो नतवर्ण सुएकहि अन्त कहावैं२७४ कर्म महीसुर कर्महिं क्षत्रिय वैश्यहु शूद्रजो कर्मप्रभाऊ। कर्म परित्यजि ज्ञान विवर्द्धत चारिहुमें यकदुष्ट स्वभाऊ॥ बूझत शुद्ध स्वभावहिये बसवर्ण विवेकन जानतकाऊ। मंगलआपनिभूल भ्रमावत नातरुब्राह्मण शूद्रअभाऊ २७५ योगिबने यक जङ्गम दूसर सेउड़ तीसर चौथ सन्यासी। पंचमहैं दुरवेश कहावत षष्ठम ब्राह्मण शुद्ध उदासी॥ आपन मारगकी मति भावत आपनहीं रसमें चितभासी। मंगल जोषटहू यकठा रसहोइ अनूप अकथ्य प्रवासी २७६ कामकिखानि समुद्रकि लोभके मोह के धामबसैं मनसोई। क्रोधकि मूरति सूरतिद्रोहकि औममता मद पूरणजोई॥ अंगविभूति जटासिरपै मृगछाल कमंडलहस्त धरोई। मंगल साधुकि भीषम जानिय नामपितामह पूतन को-

ई २७७ शिष्यकरैं धनआशलगी मन मानकि पद्धतिचित्त नि-
वासै । पंथ चलावत वेद विवर्जित ज्ञान गुवावतहै अनयासै ॥
ब्रह्मलखावत नैनसदा ज्यहिहेरि फिरै मुनिसंत उदासै । मंगलु
लाखलखेरनके घर झूंठनके मुखमें किधौंभासै २७८ बोहितपंथ
भवार्णवमें बहुशिष्य चढ़ायलिये सुखमानी । आपुनहीं कनि-
हारमहा भ्रमपंच प्रभूतभर्‌यो अभिमानी ॥ पारलहै किमिमध्य-
हि बूड़त मोहबयारि उछालत पानी । मंगलभूल जहाज चढ़ौ
जनि बैठिरहौ अपने घरआनी २७९ जो कनिहारमिलै युतबो-
हित तीनतजौ करिकै चतुराई । धाइनजाइ चढ़ौ बिनबूझ जो
पारते आवत लोग लुगाई ॥ पूंछितिन्हैं पुनि खेवट याचिकैहेरि
सबैतन बोहितभाई । मङ्गलशुद्ध समाजचढ़ौ गुरुदेव प्रतापलगी
उहिपाई २८० शुद्ध अशुद्ध न मानत नेकहु अंतरमें अपनेभ्रम
भारी । आननहूं उपदेशतहैं जनुधर्म बिनाश कि मूरति धारी ॥
एक सनातन ईश्वर मानत सो न मिलै अपने मतचारी । मङ्ग-
लका कहिये हरिदासन दुण्डप्रणाम करौ सुखकारी २८१ वेद
सुचारिकहैं ऋगयो यजु साम अथर्वण धर्मपुराना । चारिकिताब
जबूर इँजीलकहो तब रेतजु है फुरकाना ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय
वैश्य जु शूद्रहु चारिहुवर्ण किये निरमाना । सैयद शेखजु मुग्ल
पठानलौ एकते चारि कि भूलकि ज्ञाना २८२ जाति न पांतिन
वेद किताब न पीर गुरू न मुरीद न चेला । होत भये मनुष्यौं किधौं
आसम तादिनको मन अद्भुत खेला ॥ जाबिधि बाढ़िगये नर भू-
तल ता बिधि बन्धन मोक्ष प्रहेला । मंगलजाति किताबभयेसब
मुख्य अनेक कि ठेलमठेला २८३ ज्योति दिखायके मोक्ष
चढ़ावत पावक तत्त्व न ब्रह्म अनादी । रेत पियाय बदैं गतिएक
लौं बारिकीतत्त्वकि मोक्ष प्रसादी ॥ मंत्रजपाय के मुक्तिबता-
वत अक्षर रूपनलौ अविवादी । मंगल मौन भली नबकौ अब
वस्तु अकथ्य न दूसर बादी २८४ जो श्रुतिके बिपरीत भण्यो
फकु बोध स्वरूप गया अवतारी । विप्रन निंदक कीन्ह अपूजित

की पुरुषोत्तम बाखिनिहारी ॥ श्रीजगनाथ सबैयक ठामहिं भोज जिमावत बेद बिसारी। मंगल निंदक कोउन भाषत एकादशी जहँठाढ़ि पछारी २८५ छंद ॥ सेतुबंध शिवदर्शन कीन्हे देहद्वारिका जारीहै। बद्री उदर कुंडजल पीकर सकल ब्याधि निरवारी है। पुरुषोत्तम पुर भात खाइके काशी करवा धारी है। मंगल मुण्डप्रयाग मुड़ाया तदपिन आशा हारी है २८६ मक्केजायकरी हज अकबर सबगुनाह बखशाये हैं। करी जियारत जाइमदीने करबला फिरि आयेहैं ॥ दबी कुरान बगलमें मैया हाफ़िज़बड़े कहाये हैं। मंगल कवनि जात जो दिलमें हिरसौ हवा छुपाये हैं २८७ ॥ सवैया ॥ श्रीजगदीश्वर तोहिं कोजानत आपनहीगति जानिनपाई। आवकहां कयहिग्राम निकेत को जाबकहां तजि काय स्वभाई ॥ क्यों ठहरे इतको ठहराइसि ज्ञान अज्ञान कि बाखि सुनाई। मंगल जानिसकै अपनी गतितौजनआपन धामहिं जाई २८८ मारग भूलिगयो मतिमें भ्रम पंथिभ्रमाय महा बिकलाई। क्यों अपनो शुचि मारग पावत जाननहार मिलेबिनु भाई ॥ त्यों यह जीव बिषयरसलंपट जात जितैतितही भ्रमताई। मंगलसंत सुजान सुमारग जानतहैं अरु देतबताई २८९ ॥ बिष्णुपद ॥ हरि गतिजानि सकत कोभारी। मायापति अज अकर अनामय अलख देव असुरारी। नरतनु धरै सबय करुणा करलखत न बिधि त्रिपुरारी ॥ मन भावित कृत करत जगत प्रभु श्रुति मर्याद बिचारी। धर्म सेतु जनहेतु चारि फल दैनित करत सुखारी ॥ सुर मखि सुवन काक कायाधरि सिय पगचोंच प्रहारी। कीन्ह महा अगमहा शत्रुवत वाधि तज्यो भौमारी ॥ बालि बध्यो परनारि निरत लखिभस्यो इंद्र अकवारी। मंगल कोजानत प्रभुकी गति तू भजु श्याम मुरारी २९० मन भूल्यो त्वहिं कौन चितावै। प्रथम तोहिं इंद्रीपति कहियत सेवकसम तू धावै। बिषयभोगबिष तुल्य बदत श्रुति सोअमृत करिपावै ॥ कूकुरलौं इत उत धावत है लाजनहीं उरआवै। मम कहनी

सुख खानि सकल विधि सोत्वहिं नेकन भावै ॥ कामादिकसुत तोर प्रकट यह तिनके संगमजावै । लखि अनीति पथतजत समतिमति अबुध किधौं मदछावै ॥ लोकरीति परलोकमनोरथ दूनों स्वकर नशावै । मंगल अबते मानि सीखमम हरि आतम किन ध्यावै २६१ मन अपने मनदेखु बिचारी । तजिबेगता ब्यंगता गतिकी बैठीस्थिर गुणधारी । जेखल महा शत्रुसम बर्तत तिनहिं कहत हितकारी ॥ प्रीतम सुमति सुगति शुचि दायक त्यागत बिषय प्रचारी । सूरज जातधाम अंतकवश जाइ-हि देखु निहारी ॥ तहँतुवहितूशत्रु गति दातासाखीहोइ अगारी। महा मोह मयजानिधर्मबिनुयमचरगहि करववारी ॥ नरकमेलि वाधिहिदैताड़न कोउनतहं रखवारी । मंगल शोचि यहै भजिले किन श्रीराधिका बिहारी २६२ यह संसार लखात असारा । केतिक धनी निधन समबिचरत अधन धनिक ब्यवहारा । वा संपति यहिकर दुख दारिद्र कितगा करिय बिचारा ॥ महाराज गहि राउ बंद्रिकिय दीनराजबैठारा।तासु बिभव दीनतायासुकी केहि दिशि करत बिहारा ॥पंडित शिर पिशाचिका लागी मूढ़प-ढ़यो गुणसारा । वापांडित्य मूढ़ता याकी मिटैन लेशप्रचारा ॥ सतन अतन बिनुधाम गेहयुत होत सहजचहुंद्वारा । मंगल भजु श्रीश्याम रामपद पावै सबसुख न्यारा २६३ आपु आपनीभूल भुलाना । ज्यों शाखामृग अन्नगहेकर बंद्रिपस्यो अनुमाना । तज त ताहि मोचैसो बँद्रिते नहिं आवत असज्ञाना ॥अरुजिमि श्वा-न दर्पणी मंदिर निज प्रतिबिंब भ्रमाना । भूंकि मस्यो हरिगि स्यो कूपजिमि गजरद बिनु पछिताना ॥ तिमि यहजीव बिष-यमायावश मृषासत्यनहिं जाना । सर्बस खोइदयोबैरिनकरअंत समय दुखसाना ॥ अबहि सबेर चेतलखु आपुहिं मिटै सकल बिषठाना । मंगल सुमति सतोगुण प्रकटै जेहि मगलहु भगवाना २६४ लोगकहत मनतू बड़ज्ञानी । मेरीजान महामूरुखतू बि षयकलख अभिमानी । बेदपुराण बिबर्जितजोपथ ताहिचलत

रुचिमानी ॥ गुरुपंडित कवि संतबखानत काम क्रोधदुखदानी। तूतिनको संसर्ग समोदित करत सुखद चितआनी ॥ क्षणक्षण भ्रमत फिरत भववीथिन जिमिभृङ्गी अज्ञानी। थिरनहोत पलएक नीचतू विषय विवश छलसानी ॥ करत विचार नीचवत इत उत लखितुहि लाज लज्जानी। मङ्गल बारबार कहतोसन भजु किन ब्रह्म अमानी २६५ मनसुनु सीखमनोहरमेरी। भ्रमतकिमर्थ अनित्य जगतमहँ तजिदुबिधा मतिफेरी। भजिले रामचरण सुखदायक होइ सुगति सुनुतेरी ॥ अंत समय नातरु पछितैहै पायत्रास यमकेरी। मात पिता प्रियतात मीतहितु सकै न कोइ निबेरी ॥ ज्ञानीगुणी मूढ़ पशुपक्षी देवदनुज चहुंफेरी। कालबली सबहीको भखि है बदतवेद बुधटेरी ॥ काम क्रोध मदलोभ मोहअरि रहेचहूंदिशिघेरी। मंगल ज्ञानखड्गसों बधुकिन करत कासुहितदेरी२६६ सुनुमन तोहिंकहौं समुझाई। जो पूरणपदकी अभिलाषा तोभजिले सुरराई। मुश्किल है अनयास बेद बुध बदत नआन उपाई ॥ चारिखानि थावर चर प्राणीरचि बिधि सृष्टि बनाई। तिनमहँ अतिउत्तम नरदेही सो लहि कस कदराई ॥ बैभवसुख समाज जग जेतोअन्त संगनहिं जाई। कपटकि प्रीति प्रतीति करतहै यहतेरी जड़ताई ॥ तातें तजिदुबिधा भ्रमसिगरे अनभव शुभ उरलाई। मंगल ध्याउ युगलपद हरिके जो तिहुंकाल सहाई २६७ हरितजि फिरि पाछे पछितैहै। कामक्रोध मद लोभ मोहवश तू कुपंथ चलिजैहै। अन्तसमय रबिपूत दूतसुनु अतिही त्रासदिखैहै ॥ सुतदारा आदिक सम्पति सब कोऊ काम न ऐहै। तजि सुरधाम कर्मबश अपने बास नरकमेंपैहै॥ तातें मानुसीखशुभ मेरी जोहरिपद चितलैहै। सुयश ससौख्य रहैजीवनभरि यमको दण्ड नपैहै ॥ मोते हितू अपरको तेरो जोत्वहिं सुमग चलैहै। मंगल सुधा सीखपीलेतू पीवतमृत्यु बिलैहै २६८ यकदिन मरण अहैतनजिनको। हिरणाकुश हिरण्याक्ष प्रबल जगहै प्रसिद्धकृततिनको। शूकरनरकेहरि

शरीरधरि कीन्हनाश पापिनको ॥ रावण कुम्भकरण कंसादिक आन असुर कोटिनको। राम कृष्णतन बिरचिकृपानिधिहरयोभार शापिनको ॥ रामलषण बलराम श्यामजू सुयश रुयातभव इन को। तेतनु त्यागिगये निजधामहिं गनैको नर नारिनको ॥ भीषम पाण्डव प्रबल धनुर्द्धर अपरो अन्यबलिनको। रहा न तन मङ्गल भजिले हरिजीवन केतिकदिनको २९९ अलखगतिलखिनपरै भाई। अजजन्म्यो अनभव सम्भवभो अतन शरीरस्वहाई ॥ अमरमर्‌यो कर्तार अकर्त्ता दायाकृतरवताई ॥ एकअनेक रूपसों देखा जलथय मांझ समाई। करणहीन जगबिनय सुनतहै अक्षर हित हराई ॥ चरणहीन तीनोंपुर नापै करबिनु सृष्टि उपाई। लिंग रहितसबलिंग बनायेकालबिना बयपाई ॥ सकलभांति बिपरीत देखियत पैवरणी नहिंजाई। मङ्गल नरकस्वर्ग देहीको दुबिधादूनोंठाई ३०० तजुमन विषय प्रसंग असारा। दुबिधाको मारग यहि जगमें छल प्रपंच व्यवहारा। कोसुख तोहिंमिले इनकेसँग मूरुख बुधि न बिचारा ॥ अबकी चूकहूक उर उठिहै पहुँचतयमदरबारा। करणीफल तोहिंनरक मिलैगो बिनु आतम निरधारा॥जे सांचे मगके पगधारी करत ज्ञान व्यापारा। तिनसोंप्रीति रीतिकरु सांची करै सुमति बिस्तारा। नीचछली सतसंगबिवर्जित परिहरु तिनको द्वारा। मंगल भजु आतम परमाथाभुक्तिमुक्ति द्वौआरा ३०१ सुनुमनतू बिपरीत बिचारी। जो थिरताहि कहत जीवनदा अरिहितु देखु निहारी। काक बुद्धिचह विषय विष्टनित मति बिनुहोत दुखारी ॥ ज्ञान पंथ जग जन्म नभावत तुहींनिरय अधिकारी। दिनमणि उदय लखतजगस्थ्या जान उलूक अँध्यारी ॥ गौरी सकल भूत सुख सोवत चकइहि पतिदुखभारी। चारिप्रकार चारिविधिजानै चतुराश्रम नरनारी॥ प्रकट प्रताप विख्यात ब्रह्मको चहुँदिशि ज्योति पसारी। मंगल मनतजि चालि विषय लखु ज्योतिहुँ होइ सुखारी ३०२ कहत बनत नहिं काल कहानी। यकसँग जन्म मरणमें दुबिधाबदतवेद

बुधबानी। जासु प्रबलताबश पुरतीनों बुधब्रज गिरा भवानी॥
शोक सौख्य संयोग वियोगहि देत सबहि अनुमानी। कोनरमूढ़
रामबन सेयो कृष्ण तजी रजधानी॥ बायुअग्नि यम इंद्रमरुत
शशि बन्दिपरे जगजानी। जगजित शुम्भ निशुम्भ बधेरण श्रीदु-
र्गा महरानी॥ मंगल दुखसुख काल विवशह्वौ पावत भव सब
प्रानी। तूमनत्यागि भूलभजिले हरि जोकृतकालकिहानी ३०३
कैसीरे मतिहै मनतेरी। बिनु स्वारथ भरमतभवबीथिन कुपथ
चलत मगहेरी। कोसुख अन्तवन्त जगमेंमन तजिदु बिथा बुधि
केरी॥ मात तात प्रिय बन्धु तनययुत काल न सकत निबेरी।
यमपुर कष्टपाय पछितैहै मानुसीख शुचिमेरी॥ रामश्यामपद
नलिन होहु अलिदिन निशि भूल गहेरी। मुक्ति पदारथ शुभप-
रागलहु कुमति कुगन्धिमिटेरी॥ आन उपाय जन्मकोटिहु लगि
करु जगफेरा फेरी। मंगल मोक्षहोइ नहिं कैसेहु बदत वेद बुध
टेरी ३०४ ऐसोइ ब्रह्मजीव भ्रमभाई। ज्योंशशिबिम्ब पत्योजल
भीतर जलहल हलत लखाई। सूरज्योति जहँतहँ भिखरनमहँ
पैनगहीकरजाई॥ घटवहि रन्तरगगन बिराजत कुम्भनशे न न-
शाई। जलतरंग बिवरण किमिकोजियअद्भुतकथा सुनाई॥ परि
पूरण पुराण पुरुषोत्तम तनप्रति रहा समाई। दरपण यथाबिम्ब
परिपूरिततूरतरूप हेराई॥ तजिशरीर तिमि जीवन देखिय को
दूसरदोउठाई। मंगल भजुआतम सुखदायक तजिसुरध्यानलगा
ई ३०५ राम नाम तजिकाम न कोई। भूपरङ्कगोहरिपुर सुनुमन
कर्त्ताश्वर्ग बसोई। जेमद द्रव्य करत परपीड़ादया शीलता खो-
ई॥ तेयहिलोक सुखी बुधकहिये नरकवास ह्वां होई। पछितैहैं
प्रापी अन्यायी तजेंवेद मग जोई॥ कवि कोविद मुनिवर यहभाषत
वेद पुराण लिखोई। राम भजे ह्निपूत नहै है बुध सूरुखप्रिय
लोई॥ जिमिबिनजल नजीव जीवनजल यहसंक्षिप्त कहोई।
मंगल तजिभ्रम भूलध्याय हरिलेहु मुक्ति मग टोई ३०६ तजि
छल राम नाम भजिलेमन। रामभजे पूरणसुख पावै नाश लहे

सब पापनको गन। बिनु ध्याये हरिनाम मूढ़सुनुका कहिहैंयम के दूतनसन॥ कामी कुटिल दुष्ट दुर्जनजे धर्मरहित कृत कुकृत अपारन। तिनकर संग त्यागि यहि सुमतिहि करुकिनरामभजन साधारन॥ सकल पसार असारन भूलियको रथथिकल फिरत जिमि चारन। कर्त्ता अरु दाता पालकहर सो प्रभु एक मोह निरवारन॥ जिमि कारज परिहरत मिटतजग सकल सदोषअदोष अकारन। मंगल त्यों ध्यावत जन पालक मिटत कलुषदुख सह बिस्तारन ३०७ क्योंमन रामभजन तू त्यागत विषयबालनाजोवतहैरे। बेस्वारथ परमारथहीतो दोनोंकीगतिखोवतहै रे॥ तोते अधम अपरको जगमें मोहनींद सुख सोवतहैरे॥ निजपद निजकर कुमति खड्गहनि काटत पुनिकत रोवतहैरे। जानिबूझि मूरुख अन्यायी क्योंविष सुधा मिलोवतहैरे॥ मम उपदेश मानुहितकारक आनपंथ कसटोवतहैरे। जनपालक मालकसल परिहरि विषयनिरत जड़होवतहैरे॥ दुबिधा दम्भत्यागि पांचौ जड़ क्योंनशरीर बिलोवत हैरे। मंगल मुक्ति पावनहिं कर तव नरकबीजक्यों बोवतहैरे ३०८ मनतू करसि न कहनिहमारी। जेहिभेषजशरीर रुजबाढ़त पुनित्यहिभषकुविचारी। पण्डितचतुर साधुकबि सात्विक तजतजानि दुखकारी॥ चषनाशत जो अंजन लावत फिरि अंजत मतिहारी। जाकुरदण्ड अमितनित पावत ताहिबदत हितकारी॥ परिहरि कुटिल कुमगचलु शुभ मग पांचपचीस निहारी। गुरुज्ञानी उपदेश अवणधरु सुनु यह सीख हमारी॥ बिनशैं पाप ओघ यक क्षण महँ लहै प्रतिष्ठा भारी। मंगल अंत पावनिज पदको करिश्वाला रखवारी ३०९ तुमप्रभुसदा दीनसुखदाई। को दूसर ध्याइय बिपदामें जोप्रभु होइसहाई। प्रतिपालक दासनके श्रीहरि श्रुतिपुराणयहगाई॥ मैंअतिदीन मीन जलबिनु जिमि करिय कृपा सुरसाई। चिन्ता मोह क्षोहसब नाशै गहैबुद्धि थिरताई॥ तुव यश बिशद रैनि दिन गावों सबभ्रमतर्क बहाई। मिटै लोय अघपुंजनशैं ज्यहि

पुनिन लहौंतन आई ॥प्रतिक्षण तव पदध्यानकरत प्रभु मनमहँ प्रीति दृढ़ाई। मंगलपै दयाल ह्वैजेहरि गही सत्यशरणाई ३१० बिनु हरिभजन न मिटै विकारा। कोटि उपाय करै बिषयक नर नानाग्रन्थ बिचारा। ब्रत तीरथ संयमबहुकीन्हे होइनहीं निरुवारा॥ स्रक त्रिपुंड़ शिरजटा बढ़ाये बपुष लगायेछारा। बिषयबासना नाशलहत नहिं अधिक अधिक बिस्तारा॥ तू तजिकेमन निज चतुराई ध्याउ सृष्टि करतारा। आपु विकार नशैं भवकेसब पावैसुख मुदसारा॥ को जानत मनमानतमूरुख करत बिबुध निरधारा। मंगल तजि आपनि जड़ताई करु नितज्ञान पसारा ३११ वृथाजन्म खोवत कथहिकाजै। मिथ्या बकत फिरत बहुबीथिन बैठत दुष्टसमाजै। दोष लहत संसर्ग बिबशहै कसन मूढ़ तजिभाजै॥ सत्यसिन्धु करुणानिधि भजि किन ज्ञानगली नितगाजै। कपिपति तातपुत्र चर जेहिते तोहिं बिलोकत लाजै॥ कर्मपाश बंधन भव सुखदुख दोनोंभांति अ-साजै। मम उपदेश चलत मनमूरुख सुख तुवसंग बिराजै॥ उत्तम धामलहै परिपूरण मुक्ति निशान सुबाजै। मंगल के मन सत्य ज्ञान गहि पुनि न लोक यहिराजै ३१२ कर्मप्रधान जगत सब कर्मा। कर्म प्रताप सुकृत अघकृत नर कर्म रहित को धर्मा। कोटि उपाय गहै दृढ़तानहिं बदतधीरमति पर्मा॥ चतुर सुजान कर्म बश जग लखि त्यागत धर्म अधर्मा। परमातम पूरण अबिनाशी त्यहि ध्यावत तजि भर्मा॥ जब बिपरीत होत करणी तब होत न उद्यम बर्मा। राम बसे बन समर तज्योहरि जानत बुधयह मर्मा॥ काल कर्मवशअसिवर घातत ज्ञानबिनाकी चर्मा। मंगल तजि दुबिधा भजिले हरिजाकृतक-र्म कुकर्मा ३१३ ऐसा जबलगिजाय सनेहा। जिमि कामिहि न नारितजि भावत भवन रवन निज देहा। अरुजिमि दुखितचहत सम्पति नित खोजत गेह कुगेहा॥ चातक यथा चहत जल स्वातिहि पियतनयहुजल मेहा। अत्रिजपक्षिरैनिजिमिहेरत

मिथ्रमानि मतयेहा ॥ इमि हरि भजन करिय निमिथ्रासर भवभूल्यो हितकेहा। निबहत परिपूरण हित प्रणमन सुयथदासभवतेहा ॥ छल प्रपंच तजि प्रीति लगावै पावैपद न सँदेहा। मंगल मोह निशाकिन जगिभजु अज अव्यक्तनिरेहा २१४ सत संगतिसेइयवितलाई। संकठकोटिपरै नहिँत्यागियथहबुधयुक्ति बताई। मति कीरतिपावै याजगमें अंतदेवपुरजाई। कृपणमूढ़ कुलहीन क्रोधमय कुबुधि होयनरभाई ॥ सतसंगतिपरभत सत मगगहि तजतसकल कुरताई ॥ बिदित प्रसंग सदनवत याजग शुचि अरुअशुचिलखाई।तिमिप्राणी शुभसंगकुसंगतिपावत मति कुटिलाई॥ चतुरसुजानत्यागि खलसंगति मननिजकरतललाई। मंगल भजत आदि अविनाशी दुविधा दोष बहाई २१५ क्यों भूल्यो जगखेलअसारा। जोदेखत करपत जोमन महँ जहँ लगि विश्व पसारा। सोसब नाशवानसुनु तिखममकरु किनज्ञानबिचारा ॥ कूकुर लौं धावत दिशिचारो भूंकत वृथा अगारा। राम भजनतजि सुगतिन जड़तुव खोजतपंथ अपारा ॥ मुनिवरकवि कोविद जोवत सबहरिपद रज प्रथबारा। ताहित्यागि भवसुख किमि लहुरे यह मत मूढ़ हमारा ॥ आठ याम आतम निज हेरत तजि द्वितीय आधारा। मंगल मुक्ति युक्ति यह सहजै पाय होइ निरुधारा २१६ कालगति अगमअपारलखाय। जबत्रिलोक उपजैनहिँ सन्तौनहिँ त्रिदेव सुखदाय। तबहूं काल शून्य थल बर्तत देखोज्ञान दृढ़ाय ॥ महाप्रलयके पीछे बुधजन काल रूप रहिजाय। सुरनर नाग चराचर जेते कोउन सकत बताय॥ कालकलेवा सबतनधारी बदतभेद समुदाय। जानिन जातकालको ईश्वर जानिसकत बुधगाय ॥ त्यागि भूल दुविधा दुराय सब भजु हरिनाम स्वभाय। मंगल कालरूपते उबरै रहै अमा रसपाय २१७ जीवहि अलख अनादिकहावै। जहँदेखौ तहँ जीवनिवासी नहिँ द्वितीय चितभावै।पैनहिं दृष्टिपरत कौनहुं कृत गयेन जाय न आवै ॥ अधऊरध दिशि विदिशिबिराजै एक

रूप छबि छावै। चारिखानि मधि आपु बसतहै कोउनहीं लखि पावै॥ मरै न जरै कटैनहिँ सूखै बृद्धिहानि को पावै। पूरणरूप कालगति नाहिंन नरक स्वर्गकोजावै॥ जो कदाचि बुधिनिर्मल साधू रंचकनिजहि दृढ़ावै। मंगल तौलचिदानन्द सुख निजवर प्राय लुभावै ३१८॥ सवैयाछंद॥ या भवकी प्रभुता दुखदा बढ़िजातकबौं घटिजात सदाहै। दारुण क्रोधप्रबोध न मीतको संपतिको मद मोह यदाहै॥ ज्ञान सुधर्म सुमारग आदर कोबिद औ कबि कौन तदाहै। मंगल देखुबिचारिहिये सब देखतजानत वेदबदाहै ३१९ आयु अमोल गमावत तू जड़ ध्यावतहै नहिं राम कृपाला। कोटिहुद्रव्यदिये क्षणएकरहै नहिँजीव न आवत काला॥ योंदिन रैनवृथा बकबादमें खोवतहै बिषयी मतवाला। मंगल चेतु बितीतत आयुष को हितु संगचलै भ्रमजाला ३२० त्यागि सबै पितुमातु सहोदर पुत्र कलत्र सुखासनबासा। मुण्ड मुड़ाय बिरागलियो चलिसंत समाजहु कीन्ह निवासा॥ तीरथ औब्रत आसन साधन आतपशीत सहो गत त्रासा। मंगल लोभ न जीतसको जन धाम नशायलही परिहासा ३२१ पुत्रकलत्र सबै परिवार जो देखतहैं जिमि लोग बजारू। आपन आपन कामलगे सबकोहितुना रिपुता निरधारू॥ फूटिचलै निजस्वारथ पायन संगकरैं फिरिको दुखभारू। मंगलधाम उदासबसै शुचि साधुअहै न द्वितीयबिचारू ३२२॥ गोपाल०॥ साधुदरशरुज भेक भुजंग। साधु दरश अघमल कहगंग॥ दर्शन साधु मुक्ति जनदानि। बंदिय साधु चरण रुचिमानि ३२३ तन मनबचन तजे बिषयान। मौनित कतहुं कथा हरि गान॥ उदासीन मति तीनिहुं काल। साधुन ते मनधरे गोपाल ३२४ माया ब्रह्मकरै निरधार। सतरजतमगुणतीनिप्रकार॥ जीवोद्धारण ग्रन्थबना-व। साधु धन्यअस श्रुतिमतगाव३२५ जीवन मरण उभयरुचि एक। शीत उष्णकर चितनबिबेक॥ उद्यम एक निरूपणज्ञान। धन्यसाधुभव बेदबखान३२६ दंभलियेजोधर्म प्रसिद्ध। ताहि न

साधत जानि निषिद्ध ॥ सेज भूमिसोवै यकभाय। सोजन धन्य रूपदरशाय ३२७ मूढ़जानिउपदेशैज्ञान। ज्ञानीकोसिखवैविज्ञान ॥ बिज्ञानिहिश्रातमा दृढ़ाव। धन्यसाधु जाकेश्रसभाव ३२८ पण्डित मूरुख जानैएक। जाकेचितनहिँ ब्रह्म बिबेक ॥ सारासार बिचारीजोय। साधुधन्य भाषियजगसोय३२९एकअनादि पुरुष अबिनाश। गहैसदाताहीकीआश ॥ बिषयकनरन न सारबुझाव। साधुचतुर भवधन्यस्वभाव ३३० बाणऔरनिर्बाणनिरूप। युक्ति मुक्तिकी कथै अनूप ॥ आगम निगम धर्म बिस्तार। धन्य पुरुष बिरचे करतार ३३१ निन्दाअस्तुतिमानामान। समजानतआनंद निधान ॥ भोजन बारि मिलै सोखाय। मंगल धन्य पुरुष यहि भाय ३३२ आवत संत न गेहिनके ढिगकानन भूधर खोह बिलाशी। पंचप्रभूत व्यथातन नाहिंन प्यास क्षुधादिककी गति नाशी ॥ शुद्ध समाधि बिलोकत ईश्वर सात्विक दृष्टि लखैचतुराशी। मंगल दर्शन पावत सो जनजाहि सुदृष्टिकरैं अबिनाशी ३३३ तीरथ में नित न्हानकरैं अरु देवल में नितपूजत देवा। ज्ञानकथैं परिणाम अकारथ उत्तम बस्तु बतावत सेवा ॥ कोटि घटोहि जहाज चढ़ेबिनु खेवक पारकि लागतखेवा। मंगलभूलि न जाउउतै जहँ दम्भसमाज न बेदकितेवा ३३४ तूमनभूलि बिषय रस भोगहि मृत्युकथा चितते बिसराई। आकस्मातग्रसै न बनै तब जाइवृथा जड़तोर उपाई ॥ न्याय समय पछिताय भलीबिधि मात पिता हितहू न सहाई। मंगलतोहिँ जोग्लानि गहै त्यहिते भजि ले हरि हेतु बढ़ाई ३३५ संतन के मन शुद्ध सतोगुण व्यापतहै न तमोरज आवै। जानत पूरण ब्रह्म बिभासहि आनप्रकार न युक्ति दृढ़ावै ॥ त्यागिसबै मतदण्ड अकारण आपन दोष समस्त मिटावै। मंगल चित्तनद्वैषबिमोह सदासत संगति में हरषावै ३३६ ॥ दण्डक ॥ सत्ययुगयोगसाधि सुमति समाधिबाधि बिबिध बिज्ञान आदि व्याधि नाशिमोचही। त्रेता मख अमित बिधान युत दानमान करत सज्ञान मोष पायमन

रोचही ॥ पूजन अपार ठानि प्रभुपद द्वापरहुतरत अमानिनदु-भांति चित्त शोचही। धन्य कलिभाव श्री अभावनाम लेतहरि मंगल मुमुक्षु होत पाप तुखै नोचही ३३७ माया मोह व्यापै मन साधु ताको बेष तन बोलत न काहूसन मौन बाणिधारेहैं। क्षुधाऔपियास लागै चित्त क्रोधमोह जागै लोभ मानप्राण त्यागै बोलत इशारेहैं ॥ पद्धतिलखावैं आपुज्ञान ध्यान पाठजाप पक्षी पशुबोलिनमें करतबिचारेहैं। काहूको बुझावैं न चितावैं शुद्धज्ञान तात जात क्यों मुमुक्षुतहां हाथको पसारेहैं ३३८ ॥ सवैया ॥ तोहिं दई रसनाकरतार बिबेककि बाणि सदाज्यहि गावै। मूढ़-नको उपदेशकरै सुकिधौं पशुलौ अपनैबनिजावै ॥ सैनबुझावत आंखिन हाथनबूझत कोउनजी अनखावै। मंगल भूलकि ज्ञान अहै मुनि संत बिबेक हमैं समुझावै ३३९ ज्ञानभये भ्रमशानशि जात बिबेक बिचार स्वरूप सोहावै। आपु न बूझि बुझावतआ-नन भूल मिटाय भलेपथलावै ॥ दंभअहंकृत स्वांग दुराय सुमं-गल मूरतिध्यान बतावै। नातरु ज्ञानि बिमूढ़ कहा छलिखात जगैन जगैन जगावै ३४० ॥ कवित्त ॥ कोऊकहै मृतक जलाय आगि पिंडपारिकीजै दशगाततिल जलदान मोषहै। गाड़िभूमि तीजाकरै दशमाचलीसीकहै न्याय दिन उठैजाते सहित संतोष है ॥ कोऊ कहै जारै न मृतक भूमि गाड़ै बुध पेट फारि खड़ाकरै भवन अदोषहै। मंगल बदत एक मृतक बहावै दूरिचारि मांझ कौन मूढ़ कौन ज्ञान कोषहै ३४१ ॥ सवैया ॥ एकहि ग्रामके पंथ अनेकन हैंदशहू दिशिते चलिआये। अंतसबै यकठाममिले मन सत्य असत्य न जात बनाये। ज्ञान दिशाबिदिशा अधऊरध नीर सबैजल राशिसमाये। मंगल कल्पत बुद्धिसदा निरबुद्धि किधौं शुचि मारगधाये ३४२॥दंडक ॥ अंतजीव बाँधियम धाम जात न्याय होत लहत स्वकर्म फल एकनको ज्ञान है। एकमत जीवनको न्यायएककाल होय उम्मतिरसूल बकसावै अनुमान है ॥ एककहैं ब्रह्म जो अनादि तहां जीवजात एक भणें कर्मबश

कौन भगवानहै। मंगल विचारैं एकजीव आपु ब्रह्मरूप काकी न्याय कौनकरै बैठो कौने थानहै ३४३॥ सवैया॥ जीवभयो न अहै मन मूरुख औमहिंहोय सुजान अगारी। कर्मनके बश शब्दनहोवत नित्यअनित्यसकारअकारी॥ ताहिअधोरध बासन भाषिय है अधऊरध ज्योति पसारी। मंगलपाप ग्रसैनहिं आतप दोषकि सूरजकेतन भारी ३४४ तूपरमातमहै सबठामनकोटिननाम न लोगपुकारै। सोसुनि देत मनोरथहै नित शुद्ध अशुद्ध नचित्तबिचारै॥कोउ न रूप न धर्म्म सुकर्म्म न जातिमतामनतो अनुसारै।मंगल यांचत तोहिं कृपानिधि सत्य मनोरथदे अबिकारै ३४५ कासन जायकहौं अपनो दुख याभवमेंप्रभु तोहिं बिहाई। दूसरकी न समर्थबिलोकतमोमनमेंजड़ताद्दढ़ताई॥ पालत लोक चतुर्दश आपुन क्योंममकाज धरी निठुराई। मंगलमांगत जोरि दुवोकर देहु मनोरथ भेद नशाई ३४६जौलगि चित्तमनोरथ चाहत तौलगि शुद्ध सतोगुण दूरी। जो भवआश विबश्यरहै सुरलोक अलोक दुवोसुख भूरी॥बंधनमोक्ष दुवो मनभूलमनोरथहै न सजीवनमूरी।मंगल जोविषयी बिषनाशत सोप्रभुसत्य रहाभरिपूरी ३४७ जानतहै सबके मनकी प्रभु सत्यअहै मनअंतरयामी। तासन कौन मनोरथ भाषिय भाषतही नर जानत कामी॥ देइगोआपु क्षमानिधि तोकहँ क्यों बकवादकरै नितवामी।मंगल ध्याउसदा निजआतम जोसबमें सबते परधामी३४८ सुंदर मारगहू डरमानत तूमन क्यों भवपंथ चलैरे। देखिअशा दुबिधा उरलावत क्यों मृगनायक धाइदलैरे॥ काम सक्रोधन जीतिसकै फिरि मोह किधौं निजहाथ मलैरे। मंगलसंतसमाज नभावत ज्ञानकहा किधौं कौन थलैरे ३४९ ज्ञान दिवाकर शुद्ध प्रकाश तहां न सकै निजबस्तु बिलोकी। तौफिरि भक्तिकि चंद द्वितीयकी नेक बिकाशत होत अलोकी॥ मोहनिशा अँधियारकि सूझत नैनपसारत दृष्टि सशोकी। मंगल खोजिले सत्य पदारथ दृष्टि सकै खलमोहन रोकी ३५० जीव चराचर आकर चारिहु

भूमिधरे अपनेशिरभासै । भूमिहि शेषधरेशिर सोहतकच्छप पृष्ठ किशेष बिलासै ॥ कच्छप बायु विमंडलमें नभमें पुनिबायु प्रबी-णनिवासै । मंगल हैनभ शब्दकि शक्ति सुशक्ति सनातन ब्रह्मप्र-कासै ३५१ शक्तिबिना कछुहोतनहीं व्यवसाय उपाय न कारज काजू । जौन अशक्ति सो कोकृत साधत मृत्यु किधौं जड़लौतन साजू ॥ शक्तिअनंत अपार भणेश्रुति शक्तिलेदेव त्रिलोक समाजू । मंगल शक्तिहि चीन्हिलहै हरि कौन अशक्ति करैभवराजू ३५२ सिद्धनकेतन सिद्धि न लागतवृद्धनकेमनवृद्धि न आवै। शूरशरीर न आतप व्यापत ना हिमते हिमवान जड़ावै ॥ पावक तेज न पावकदाहत सर्पमुखै बिष ना मरिजावै । मंगलत्यौंमनबुद्धिअहं चितजीवहि क्योंहु न लावहुधावै ३५३ जाकरवृद्धि न हानि न ताकरजाकरहानि न वृद्धि न ताके ॥ मावस औपुणिमाकि कथा शशिक्षीण औवृद्धि न कंतप्रभाके । वृद्धिऔ हानिदुवोदुखदायक आवत्त जावत की समता के ॥ मंगल त्यों अध ऊरधमें भ्रमजो रस एक तोको दुखवाके ३५४ देखिलि काजो कहै सबमेंप्रभुखो-जिलि का जोकहै इतनाहीं । ष्याइलिका जोपै दृष्टिनआवयता-इलिका जो अकाय सदाहीं ॥ पाइलिका जोपै हाथ नलागतगा-इलिका जो अकथ्य कथाहीं । मंगल पूरणज्ञान उदय अपनेघर मेंन इतैउतजाहीं ३५५ पण्डितका नहिं आतम चीन्हत कोक बिता मन ज्ञानन जाकें ।संतकहा उर तोष क्षमा नहिं भूपकहा भवसिद्ध नयाके ॥ योगकहा न समाधिहि धारत भोग कहा धन नारिबिनाके ॥मंगल ज्ञानकहा भवमें तिमि जोनरमैं मगमेंसम-ताकें ३५६ औरनको मनतुच्छ बिलोकत आपुहि तुच्छ न शोच तहेरै । आनन के गुण ग्रामबदैं नित औगुणको अपनेगृह ढेरै ॥ चाहति पद्धति आपनिहीं खल निंदतहै सबकोअघ तेरे । मंगल दीन कहैं हम साहन साह भयो धन बातन केरे ३५७ कर्म प्रताप बिलासकरै सुरधाम अधो दुबिधो दुखदाई । स्वर्ग अधोरु अधोपुनि स्वर्गते आवत जात बड़ी भ्रमताई ॥ त्यागि शुभाशुभ

कर्मसबै मुनि संतरहे निज अंग समाई । मंगल स्वर्ग न नर्कग्रसै तिनको अपने पदमें ठहराई ३५८ बाधबिलासन है निरबाधहु वाप्रभुको मन क्यों भ्रमभूला । सृष्टिबनाय न पालत मारत हैं बिपरीत कथा तरुमूला ॥ आदिकि शून्य किईश्वर आदि बताइ सकै कथनी प्रतिकूला । मंगलको भव जाननहार अभाव किबात बकै लघु थूला ३५९ बारिजपत्र रहै जलमेंनित बारि न व्यापत त्यों जगसाधू । औ जलजीव रहैं जलराशिहि बूड़तहैं नहिं नीर अगाधू ॥ सर्प समाज रहैं तरुचंदन शीतलहीन ग्रसैं बिष बाधू । मंगल ज्ञानितथा भववीथिन डोलतनीर सहीकृत नाधू ३६० गौरवमें गुरु लागिरहे अरु पीरनकेदिल लाग पिराई । ईश्वर खोजलगे मुनिसाधु रसूल रसालतिकी चतुराई ॥ एकदु तीनि बिचारकरै बनिसंत महंतरचै कबिताई । मंगल ब्रह्मबखानकरैनहिं पूछत क्रोधि कहै चुपभाई ३६१ बेद कितेब बखान बिचारिश्रु आगम औौर हदीथकि बानी ॥ आपुहि न्यायकरै सब की मित भासित कारक जीव प्रमानी ॥ हैसुनता सबकी निज कानन तौ तनुधारि परै अनुमानी । मंगल बुद्धिथकै न बकैअब जोकछुहैं सो सही न कहानी ३६२ दीरघमें लघुजानिपरै अरु हैलघुमें परिनाहशरीरी । थावरमें चरदेखिय औचरमें पुनिथावर सोगति धीरी ॥ थूलनमें अति सूक्षम आवत लिंगनमें जनु थूलकिथीरी । मंगल क्यों कहिये प्रभुकी गति ह्यां भवकी गति मैं मतिसीरी ३६३ ज्यों शिर औश्रुति मस्तक नाक सुलोचन औमुख दंत गनावै । जीभ कहै पुनि कंठभुजा उर पेटसनाभि गुणी समुझावै ॥ लिंग गुदा पगस्यों नखते शिखलौं जिमिहैतन नाम कहावै । मंगल त्यों तिहुंलोक अलोकहु नाम सनातनब्रह्म बतावै ३६४ जाहि कहै सबके शिरपै पुनि ताहिकहै सबकेतन वासी।भाषि अजन्म अनादि बदै पुनिगावतहै रघुवंश प्रकासी॥ रूप न रेख न रंगभर्णै फिरिभाषत शेषकेशीश बिलासी । मंगल द्वैत किधौं यकभावन फूलत गालजो आवत हासी ३६५ सीख

कछू हमहीसन ज्ञानविचार बिबेक लहौ सुख जातैं। तेहमको पुनि ज्ञानबढ़ैं गुणि छंदअनेक कथी कबितातैं॥ आपनमें नहि-भाव बिलोकत नित्यसिखावत योगकि घातैं। मंगल सांचकहा-वतहै यह नानिकेआगे ननौरेकि बातैं ३६६ जोप्रथमयपितु तौ पुनि काकर पुत्रकहौ पितुहीन न सोई। बृक्ष बढ़े जिमि बीज बिना किमि बीजभयोबिनु वृक्ष न होई॥ कारणतौ बिनुकारज नाहिंन कारज कारण हीनकिकोई। मंगल शून्य न एकबिना तिमि एकनशून्य बिहाय बदोई ३६७ राम निकाम भयेसुत दोइ अक्रोध कहावत ब्राह्मणघाते। मोहबिना बहुरोवत भ्रातहि लोभबिना शुचिराज सुहाते॥ मानबिना निजनारि तजीहित-कारक क्यों निज बंधुडुबाते। मंगलमित्रतजे सबबीचहि सेवक आप स्वधामन जाते ३६८ जासन भाषिय सत्यकथा अनखाय कहै बड़निंदक तूहै। ज्योतिषके मतमेंअटको नभकीदरशै नहिं जानतभूहै॥ बीजकि बाणि न बूझिसकैलपिटायअजानगहैमहि रूहै। मंगलक्यों समुझैखगहोरिल पांवदबीलकड़ीगतकूहै३६६ गोमलते जिमिकीटभयो नहिंमातपितानिजजानत सोहै। त्यों प्रथमैमनुभे किधौं आतम बुद्धिसमान पितानिज जोहै॥ जान-तनाहिंबनावनहारहि कोटिकबेद किते बनिटोहै। मंगलपंखकबू तरहेरत कोकबितादुबिधा न बिमोहै३७० जादिनभेमनु नारि समेत लिखा न पढ़ा तब अक्षरकोई। बाढ़ीजबैअतिसंततिताक-र कीन तबै गुणि आगम सोई॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य नहीं तबनीचकुलीन दुधामति खोई। मंगल एकहिबर्ण तहांसब सों अब भांतिअपार कथोई ३७१ ठाकुर औ तुलसी यक भावहि ताहि धरे शिर कामिनिराते। बाद वृथा कृत साखि मृषा कहि जूप छलै निज धर्म कहाते॥ माप तुला कृतकूटिसदा परनारि औ पातुरि के सँगमाते। मंगल निंदक सोकिधौं सज्जन भ[illegible] कहावत मूढ़महाते ३७२ ॥ कबित्त॥ तीरथते आइकहै ह[illegible] लगतुमोप तुःख अति मारगमेंकहांलौ गनाइये। अमुक [illegible]

जहां भोजन न लेशमिलै अमुक सुथानतहां बड़ो सुखपाइये ॥ शीतकी कहानी धूपमेह बादु भाषिकहै मंदिशादि महिमाबतावै शुचिताइये। मंगलनहानप्रात धकाधकी चोरठग मीतकोमिलन गावै मुक्तिको न भाइये ३७३ माघमें सवार गंग डुबकीलगाइ खोजै जलमधिमोक्षन कृपालु निजपाइये। ठगनके मेलेमेंझमेले परि भाँति भाँति बसनादिखोइ खाय घूमिघर आइये॥ पांच ओर आगिबारि ग्रीषम में देहजारि मुक्तिनदिखानि रामरामरट लाइये। मंगल भ्रमातजीव आपुआपु भूलबश सथिर न होत जाते दुबिधा नशाइये ३७४ मूढ़ताको बासतन पंडित प्रसिद्ध भूमि गूढ़ता न जानैज्ञान भक्तिकाको नामहै। गणक कहावै न गणित बात बूझै कछु नृपति न भूमिरंच सैनधन धामहै॥ साध करि ख्यातजानै साधना न एकजौन बाधक न मारैजीव सुमति सबामहै। मंगल तथाहि ज्ञानि बिदित कुधाम देखु दृढ़तानज्ञान की न खतन बिरामहै ३७५ एकजलबिन्दु बूड़िमरत पिपीलि जौन मनमत करत पयोधिअवगाहिहीं। क्षणक उड़ात थकैम-सक बिचारै चित्त गगन निरंत ताके अंतलौ समाहिहीं॥ आतप बिलोकि जातपारद बिलाइ सोऊ करत मनोरथ दिनेश धाम गाहिहीं। मंगलबिमूढ़ तैसे खोजत अगूढ़ बस्तु गूढ़ देखिभूमित कहत पूछौं काहिहीं ३७६॥सवैया॥ ब्यास पुराणकिये कितने इक भावनसों बहुभांति पुकारैं। दायक मुक्ति बदैंयक ब्रह्मकहैं यक शंकर जीवहि तारैं॥ बिष्णुकहैं यकशक्तिभणैं यकरामकथा किधौं श्याम बिचारैं। मंगल भूलपरी मन पंडित आतमत्यागि फिरैं बहुद्वारैं ३७७ योगिनके मत योग समाधिरु जंगमके मत चेतन बानी। जैन अनादि कहैं भवकर्म सन्यास सआतम धी निरबानी॥ बादि निराश भयैं दुरबेश पुजावत ब्राह्मण पावक पानी।मंगल येपटराग किधौं कहराइत राग न आन कहानी ३७८तीरथ बासि बदैं शुचि मंजन मूरति पूजक पूतरिध्याना। जापक मंत्र बिधान सिखावत पाठक पाठ षरांग प्रमाना॥

ध्यानि स्वआतम ध्यान कहै निजज्ञानि गुणावत उत्तमज्ञाना। मंगलशालि मुमुक्षु सबैघन पोषत ह्यांकहु क्षेत्रविधाना ३७६ ईश्वर अंशलही यहजीवहै बेदपुराण कुरानबतावै। पै अबजाइ सकैढिग तासुन अंगमें क्यों करि जाइ समावै॥ कोटिउपाय बिधानकरै जपपाठ सुतीरथलौं फिरिआवै। मंगल शोच तजौ सिगरे अपने घरमें निजबस्तु लखावै ३८०॥ यथा॥ ज्यों तरुते महिपातपरो फिरि ताहिलगैनहिं कोटिउपाई। ऊरध औ अध आवत जावत संधिसमीर भ्रमै बहुताई॥ रोवतहै बिललात दशौदिशि क्यों निजखानि लहैदुचिताई। मंगल ब्रह्म नपावत जीव तथा उपचार वृथाहि लखाई ३८१ यातनकी पतिबाढ़ि घटैमन भूषणवस्त्र अवस्त्र अभूषण। जीवसदा परमानँद पूरण ताकहँ नाहिंविदूष विदूषण॥ ग्रीषम शीतयथा गतिआतप छीजत वृद्धतनेकन पूषण। मंगल ज्ञानगुणी उरलागत क्योंहुन मूरुखके मनतूषण ३८२ एकदिशा बिदिशा भरमैं यकऊरधऔ अध खोजतडोलैं। एकउपायन में अटके यककर्म प्रताप सदा गति बोलैं॥ एकभणैं हरिकी महिमा यक आपन में अपनी गढ़िछोलैं। मंगल एकसबै भ्रमत्यागत हैंथिरभावस्वभाव निचोलैं ३८३ क्योंभटकै मनज्ञान बिहाय बिभासित रूपअरूप नदोहै। ब्रह्मअनादि सहीबदसज्जन ठामकुठाम दुधा किमिसोहै॥ स्वर्गवहै पुनिनर्क वहै गुरुशिष्यवहै मुनिपंडित मोहै। मंगल क्योंन तजैदुविधा उतसोइ बिराजि रहाइत जीहै ३८४ आवत काल जबैजस जाकहं होततबै तसकाल बटाऊ। काल स्वभाव दुभांतिरच्यो प्रभुजानत सन्तसुभाव कुभाऊ॥ कर्म कहावत धर्म बिहाय न व्यापक रूप बिहीन दुठाऊ। मंगलको समुझावत बालक अक्षर पाठकबेद प्रभाऊ ३८५ कालमें केतिक बीति गये युग आतम भूत मुरारि पुरारी। केते अकाश मही बिनशे सुरभानु दिनेश निशाचरधारी॥ बेदपुराणबिलान अनेकन आगम कारक ज्ञानबिचारी। मंगल आदि अनादि नहीं ज्यहि

गायसकै न प्रबीण अनारी ३८६ शब्द स्वरूप बदैं यकजीवहि नाहिँ परै सुनि कान लगाये। एक भखैं परिपूरण ज्योतिनहाथ जरै भ्रमभूलगमाये॥ आदि अनादि न जीवन गावत दूसरओर चलैं मुदछाये। मंगल जन्म अपारन खोजत बीतिगये न धरै फिरिआये ३८७ कोटि बिचारि बिचारि मरैं कबितापढ़िकोटि बनाय मरैंरे। कोटिन तीरथ धाइफिरैं ब्रतनेम अचार अपार करैंरे॥ पावक तापि तपाइ मरैं पगएक उपाद खड़ो बिचरैंरे। मंगल बूझिपरैनबिनागुरु बातन साधनसों न सरैंरे ३८८ बेद ऋचा बहु बूझि भ्रमैं बहु आयत बूझिकुरान पढ़ैंरे। ब्राह्मण होइ कि शेखबनै चहु पण्डित आलिम नाम बढ़ैंरे॥ आनगढ़ी नित भाषि रहैं चहु चातुरिकै बहु आपु गढ़ैंरे। मंगल जानेबिना निज आतम या भवतेकबहूं न कढ़ैंरे ३८९ साधनसाधिअनेक महीतल बैठिरहे उरज्ञान बिचारी। छंद कबित्त अपारबनाइ चुपाइ रहे बिभुतान निहारी॥ योगसमाधि तजेजलअन्नहिं पै न लगा कछुहाथ अगारी। मंगलहै प मातम सत्य न दिखिसकै बिषयी तन धारी ३९० जीवहि क्यों भरमावत तू जड़ आन किआन कथाकथि भारी। पारसको खलपाथर गावतकांच गहावत बुद्धि बिसारी॥ शांतन होत बिना दृढ़ता मति तर्क अनेककिये अबिचारी। मंगल पूरिरहा सबही थल एकतुही न द्वितीय अधकारी ३९१ जन्मजरा न तजै अपनी मति ज्ञानबिबेक अपारनगाये। तीरथ न्हाय किये ब्रत संयम साधन साधि दशोदिशिधाये॥ जौलगि आतम भाव गहै नहिं पंथकुपंथ सुपंथ चलाये। मंगल सन्त सबै निज गावत पै न बचै मृतु पाशहि आये ३९२ अन्त समयजस आश्रउहै तसयों मुनि आगम बेद बतावैं। भाषिवहैं बहुसाधन गावत क्यों दुबिधा अपनी मिटिजावैं॥ कर्म किये बिनु कर्म किये यक भाव पयान मनैनहिंआवै। मंगल सिद्धि उपाय इतैजिमि पारस लोहछुये हरिभावै ३९३त्यागि शुभाशुभ आपरमै भव भाव उदासरहै चितधारै। काहुको बैर सनेहन

मानत मोहन मूरति चित्तधारे ॥ ऊपरके तजि स्वांगसबै शुचि अन्तर पूरण ज्ञान विचारे । मंगल साधु सही महिते जनसादर अन्त स्वछन्द बिहारे ३६४ आनँद रूप रहै निशि बासर त्यागि सबै सुखदुःख अकारण । मौन रहैकि भनै हरिकीरति अस्तुति सस्तुति जीवन मारण ॥ शापबिवर्जित आशिर्वादनहीन समस्त विषय बिधिधारण । मंगल सन्त स्वतंत्र बिहारत सुंदर भाव किधौं भवतारण ३६५ एक नदीतट सेतु रचावत बूझतएक कहां जलथाहा । पैरत एक न पावत पारहिकूदहि एकखड़ेदुखदाहा ॥ बांधि घड़ा श्रुतिपारचलै यक घूमि कहैं कि निरन्त प्रवाहा । मंगल श्रीगुरु बोहित पायबिनाश्रम एकतरैं सरिचाहा ३६६ ऊमरि के फल बासि यथा नहिँ जानत दूसर देशवसैरे । त्योंयह जीव धरातल डोलत लोक अलोकन चित्त भसैरे ॥ लोकअपार किये करतार तहां बहु भांति गुणी बिलसैरे । मंगल पै नलखै यहि लोकहि जीअनुमानन एकलसैरे ३६७ केतिक ग्रन्थपुराण सुनेपढ़िकेतिक पुस्तकभौनथपीरे । केतिक तीरथन्हायथक्योबहु मंत्रगयत्री सुभाय जपीरे॥केतिक पूजनपाठकियोव्रत नेमअचार कुचालि छपीरे । मंगल आसन साधन तापनहाथन मूठीखुलीन ढपीरे३६८ आपनसे करिये बहुतै परदोषबिवाद बढ़ै डर वाके। मौन भलीयहि कारण रेमन जीवनमृत्यु बृथानिततताके॥ अक्षर पाठक ग्रन्थपढ़ै किमि दीख उलूकन कंत प्रभाके । मंगल क्यों उपदेशतअद्भुत बाहिर हेरतअंतर काके ३६९ ज्यों जग लोग बदैं तसभाविय अंतर आपनि वृत्ति बिराजै।कर्मसुधर्मअकर्म बिमोह कहावत सोकहिये सुख साजै ॥ निंदक मूढ़न बादि कथै ज्यहि कारण सो शुचि शुद्ध समाजै । मंगलसत्य छिपाय धरौ उरझूठ बदौ भव आदर काजै ४०० क्यों मन झूठ कहौं भवबीधिन आदरकौन निरादर कोरे । तू बिषयी रसलंपट रेमन संमत देत बिषधरस भोरे ॥ अंत बिभोग बिलोकिय संसृति दुष्टमहाभ्रमणा मनतोरे । मंगल सोनलगी अपने जलहाथ लगै न घिलावि

निचोरे ४०१ लोक लिये परलोकन भावत मोह विबर्द्धि लहै मनमाहीं। जो परलोक गहै तोरहै कित लोकहिमें सबलोग सोहाहीं॥ जीवनमें सबभांति सदासुख जीवनमें दुखकी परिछाहीं। मंगल ज्ञान बखानत टूटत है गुण बेद कितेव कहाहीं ४०२ संमत साधु सदा सुखदामति नीच अधोगति दानिकहावै। जोजन संत असंतन चीन्हत सोदुखभोग कबौं नहिं पावै॥ आपनिवृत्ति समाधि रहीन द्वितीय बिलोकनि जीवहि आवै। मंगल सोजग जीवनमुक्त न जात अधोरध ब्रह्म समावै ४०३ त्यागि सबै भ्रम ध्याउ सदाहरि आन भरोस बिहाय अरेमन। ज्ञानसमेति सुकीरति ताकर गायकरै शुभकाज लहेतन॥ मुक्ति पदारथ हाथलगै फल आनहुं पाय गुणी सुखकोगन। मंगलसत्य बिबेक लियेनहिं स्वारथ संतनको द्वितियेसन ४०४ मोहकुमारगमें भटकै सबिबेकन तूहरिको पदध्यावै। दानि अभिप्रिय दूसर नाहिन क्योंनहिँ तूदृढ़ता मनलावै॥नाम प्रताप दशो दिशि मंडित पंडित दान अजाकरवावै। मंगलभूल न जानत ईश्वरतूकस आयु अमोल गमावै ४०५ संगते पंडित होत महीतल संगते दुष्टशरीर बनैरे। संगतेमूढ़ कुकर्मबिमोहित संगतेनीचकुलीन गनैरे॥ संगते बेद विधान गुणीब्रत योग समाधि सुध्यानसनैरे। मंगल संग प्रकाशक ज्ञान कुसंगते उत्तम भ्रष्ट पनैरे ४०६ स्वांगनमें इत आयु गमावत रोगनको मनभोग बिचारै। संगति भावति मूढ़नकी सतसंगति में न घटीकुबिहारै॥ स्वाद बिषय रस चित्त बस्यो अबक्यों शुचिज्ञान हियेमें प्रचारै। मंगल चेति अजौं भजिलेै हरिजन्मद्वितीय ब्यकारहि टारै४०७जीवनहैध्रुग याभवमें हरि त्यागि विषयरस जे लपटाने। कीट पतंगपशूखग भूचर तेपि भलेरस इंद्रिय साने॥ जेनर कायहिपाय नध्यावत आतम शुद्ध स्वभावप्रमाने। मंगलतेजड़तेजड़ जानिय क्योंकरतार तिन्हें निरमाने ४०८ तोहिं महाधिक है मनमूढ़न त्यागत आपनि चंचलताको। झूठबिषयमेंप्रयुक्तरहै सतमारगपैन स्वजा-

नहिं हाको ॥ कामकला मदकी मदता तजि लोभभजै किनकंत रमाको। मंगल सीख अपारदई नहिँ तूजड़ शुद्धभयो दुखकाको ४०६ आतमहीं परमातमहै तटही नहिँ दूरिफिरै दिशिचारी। बस्तुधरी अपने घरमें प्रतिद्वारकि खोजत ज्ञान बिसारी ॥पूछत आन बतावत दूसर जोपिबदै परधाम बिहारी। मंगल आपनि नाकनटोवत मूरुख धावत काक पछारी४१० आतमबास शरीर सहीकबि संतन भाषि बताय सकैरे। बाथल बुद्धिनहीं मन कीगति कोटि कुयोजन धाइथकैरे ॥ ज्योंत्रियभोगकराथ बिना न बखानिसकै चहुंकोटि बकैरे। मंगल आपुहि जानत आपुहि ज्ञान द्वितीय न बुद्धिचकैरे४११ याजग फागुन फागलगै अपने गृह फागुकि बारहमासी। लोग निलज्जरहैं यकमास इतै नित काम करावत हासी ॥नारि इतै फगुवागहि मांगत ह्यां नितलोभ बयारि बिलासी। मंगल यातनते भवही भल जोमर्याद गहैन बिनासी ४१२ जेतिकलागुल गाउ रहैन बहू रसको अब छूटि गयोरे। शुद्ध सतोगुण चित्तबसो तम मोहनश्यो रबिज्ञान उयो रे ॥ खोजत जाहि सोआपुमिलो भ्रम भूलकिपद्धतिको बितयो रे। मंगल मौनकि रामजपैं रसनीरस नाम बिवेकभयोरे ४१३ जो भ्रम आगिल पाछिलको अरु सगुण निर्गुण को व्यवहारू। सो अब एक प्रमाण लखो दुबिधा निज अंग बिकल्प बिचारू ॥ निर्गुण नाहिंन सगुण कोपि वहै सब ठाम स्वछंद बिहारू। मंगल नागर ग्राम्यबनी त्रिपु पूरुष एक विवेक निहारू ४१४ सौंपि स्वराज्यसबै निजमंत्रिन भूपगयोबन ज्योंमृगयाको। ज्यों हरि आव इतै तनुधारि सुमोहन रूप ब्रजै शुचिग्राको॥ कानन राजहि जानत तेजन हैं जिन दीख कबौं नृपताको। मंगल संत तथा पहिंचानत ब्रह्म स्वरूपहि श्याम प्रभाको ४१५ चाहिय आपन शुद्धस्वभावकहाच्युत अच्युतसों निजकाजू। ब्रह्महिंश्याम जु श्यामहिंब्रह्म स्वभांति दुर्भांतिन ज्ञानसमाजू॥ दोबिधितो भल एकहितो भलतू अपनीकहु त्यागिकुसाजू। मंगलहोइमही-

पतिकौनहुं दासकहाय न पाइब राजू ४१६ जाकरराज प्रजाहम ताकर जोहमहींतौ प्रजान नृपालू। कोअवतार धरैभवमें पुनि त्यागि कलेवर जात सरुयालू॥ जातबहै अतिदुर्लभ चीन्हबदुस्तरभाव फँसा भवजालू। मंगल आपुहिभूलिकहा फलहूसरको सबबूझि हवालू ४१७ ढूँढ़तकाहिफिरै मतमूरुखदेशबिदेश सकष्टबटाऊ। सिंहपर्यो पिँजराजिमि दौड़त तोड़ततनाहि न भूलप्रभाऊ॥ त्योंभ्रमपाशपरीगलमें नहिंत्यागत चंचलता व्यवसाऊ। मंगलहैतो तुहींनहिं दूसर अंतर बाहिर एकस्वभाऊ ४१८ मुण्ड मुड़ायगहे करवा दुखभोजनके घरश्रेहिकेआवै। जौन गृहस्थसो बंधनमें सुतनारि प्रयोजन चित्तलतावै। जोनहिंसंत गृहस्थनहीं तिनकी कुदशा न कथेकथिजावै। मंगल कौनहुं भांतिनहै सुख संसृतमें दुखहू दुखपावै ४१९ संतनटेक तजैं अपनी भव व्याधि अपार सतायमरैंरे। कोटिउपायकरे पितुज्यों प्रहलादसदा हरि नामररैंरे॥ जानिदुखी निजसेवक साहिब धाइसहाय प्रसिद्धकरैंरे। मंगलक्यों खलदेखिडरैं नितआपनि वृत्तिहिमेंसचरैंरे ४२० दृष्टिदिये जगराग बिलोकत कर्मबशी निरवाण बिवादो। रामरहीमबदैं बुधपारस तारसको कुछजाननस्वादो॥ मोहमयी मति बासुन आवत ज्योंपशुपै शुचिचन्दन लादो। मंगलज्ञान वृथाहि बदै जड़बानर जानत स्वादकि आदो ४२१ तालबजै न बजावन हारहै राग अलाप नगायककोई। देखनहार बिनाचपमूरति नृत्यकपाद बिहीन लखोई॥ शून्यगली तहँ आपुबिराजत ग्राम तहां जनएकनहोई। मंगलसत्यन दन्तकथा गुरुगम्यलखै दुबिधासब खोई ४२२ मारगमें सबदेवलखैं गणनाथ महेश रमापति देखे। शूरनिशाकर गंगतरंगिनि सूरसुता सगिरा त्रिपुलेखे॥ दंड दुतीनि कुसाधनमें सब अद्भुत बातकि नैन निमेखे। मंगलयोग बदैसिधिसाधक अंधनबूझत चक्षुनपेखे ४२३॥कवित्त॥कोटिसमुझावैगुरुमूरुखन बूझैबात यथाकाकश्वेतहोय धोवतनगंगमें।जोपै नसभावी गुणबाहिरको रंगकाच कछुकसोहाथ जौलौंरहत सु-

संगमें ॥ कूटिजात कालपाय किधौं मद्धजातहोत सुबुधि कुसंग तजि नाफाञ्यौंकुरंगमें । मंगल न भूलैज्ञान सम्पत्ति अपारपाय सत्यधाम पुरुष बिलोकै निजअंगमें ४२४ ॥ सवैया ॥ को अब ज्ञानगुणैमनमें मतिशुद्ध प्रकाश बिचारि चुपानी । मारणहारन पालनहार न सिर्जनहार त्रिधावकठानी ॥ एकस्वरूप अखंड बि- राजत तीनिप्रकार कथै भवज्ञानी । मंगलसिंधु कथान पिपील बतायसकै भ्रमपंथ भुलानी ४२५ बासरभानु उदोतकरै निशि में शशिखेचरहोत प्रकाशी । आदिअनादि दुऔबिधि आवत शुद्ध स्वभावलिये स्वविलाशी ॥ ईश्वरमय सबभासिपरै बिनु ईश्वर अंध प्रभाकितनाशी । मंगल धन्यअहै करतारचोफिरि ताहिर- चोन दुभाशी ४२६ सत्यदयानिधि तूसबठामन रक्षतदास सदा हितुमानी । को तुव कीरति गायसकै अति बिस्तर रूप नजात बखानी ॥ ज्ञानप्रकाश प्रभाकर मूरति मोह निशा भ्रम रूप सि- रानी । मंगल जैति बदै करुणाकर देहुस्वभाविक वस्तु अमा- नी ४२७ शीशजटा न जड़ाउ बँध्यो नहिंमस्तकभूति न चन्द- नरोरी । बासित अंग अबासित नाहिंन तीरथ औ ब्रतते मति भोरी ॥ मूढ़नमें गणना अपनी कविपंडित कीन कथा कछु मोरी । मंगलदीख दशौदिशिमें प्रभु आइपरो शरणागततोरी ४२८ मोहन मूरतिहौ परमानँद सत्य चिदानँद वेद बखाना । याभवभूल सबै बिधिदेखिय काहि कहौंमनको अनुमाना ॥ एक महीतल एकबसै सुरधाम दुऔकिमि एकसमाना । मंगल दीख जहांतहँ मायहि हौंशरणागति तू भगवाना ४२९ कोटिन भाव कुभाव बिचारिय कोटिन तीरथ धावतडोलैं । कोटिन जाप जपैं अजपापुभि पाठक कोटिन बाणिसुबोलैं ॥ कोटिनपंडित आलि- महैं अरु कोटिन वैद्यरसौषधि खोलैं । मंगल ईश्वरकोकछुखोज- न पावतहैं कितनी गढ़ि छोलैं ४३० जेगुरु के पदकी रज सेवत तेपि सुजान कहैं कबिताई । जे न गुरूगति जानत मूरुख तेन सुजान भयें भ्रमताई ॥ को गुरु सेवक नामइतै शुचि भाव भये

दुबिधा मिटिजाई। मंगल मौन रही न कहौ कछु सत्य समाज करौ सेवकाई ४३१ जो दृढ़ता अपनी मतिमें नहिंतौ ब्रत नेम वृथा तनपीड़ा। सिद्धि उपाय स्वभाव वहै नतसंत समाज उठावत ब्रीड़ा॥ भोग बिलास बिषय भ्रमरूपक सोलहिजीव प्रकाशक क्रीड़ा। मंगल ब्रह्म बिधानको बूझत धर्मप्रवृत्ति किधौं गहि मीड़ा ४३२ गावत होत्र प्रयोग अहै ऋग् औ यजु अध्वर जाहि बतावै। सामभखै उदगात प्रयोगहि वेद अथर्वण शांतिलखावै॥ पुष्टि समोहन बश्य उचाटन मारण थंभन आदि गुणावै। मंगल बेदके धर्म सवाक्य बखानत सो उपनीषद भावै ४३३ जाग्रतको यकतार बिचारत स्वप्नबिधानगुणैं यकसारा। एक सुषुप्ति विवाद लगे पुनि एकतुरीय प्रमाण बिचारा॥ पैनहिं जानतकौनु विमोदतबाद विवाद अखंड पसारा। मंगल बूझभलीनहिंआवत मूरुख खोजतसिंधुकरारा ४३४ जंगमरूप कहैं यकसाधु बतावत थावरहैं यकसंता। भेदनजानत बादिबखानत हैदुहुंभाव प्रमाणनिरंता॥ आपनि भूल विवादत आन कि बोध न होत पुराण भनंता। मंगलआतम शुद्धसतोगुण ताहि बिसारिभ्रमैं मतिवंता ४३५ सूध चषानन देखिसकै दृग मूँदि लखै बरुनैन पसारी। ऊलटि दृष्टि बिलोकत रूपहि सत्यकथा मुनिराज बिचारी॥ देखतही निज रूप मनोहर मोहमयी भ्रमदेत बिसारी। मंगल सानँद मुक्तमहीतल दम्भ बिलास कि बात नियारी ४३६ ॥ छन्द ॥ सातौ आसमानके ऊपर अर्शमुअल्ला कुर्सीहै। आपी तहां बिराजतमालिक हरसायत गति उर्सीहै॥ जाननहारा दूजा नाहीं यों कह बाणी फुर्सीहै। मंगल हदरही नहिं बेहद खाम खयाली पुर्सी है ४३७ ऊपर को सबसैन बुझावैं नीचेकी सुधि नाहीं है। भटकत फिरै भूलिमायामें पूजा पाठन माहींहै॥ कहता सुनता तर्कअनेकन गूढ़ अगूढ़ कथाही है। मंगल पै न बूझमें आवत है जैसा तैसाहीहै ४३८ यकनासूत बतावैं सच्चा यकजब रूत लखातेहैं। एककहैं मलकूत देखिये यकलाहूत सुझातेहैं॥ यकचारोंसेन्यारे

डोलैं घरहाहूत बताते हैं। मंगल भूली भटकी गावैं इतकी उत दरश्यातेहैं ४३९ जाग्रतसो ना सूतबताइय ख्वाबकथा जबरूती हैं। है मलकूत ख्वाब ग़फ़लतमें निज ज्ञाता लाहूतीहै ॥ जहांते आया तहांसमाया सोआलम हाहूतीहै । मंगलपंचदशा येअपनी आनकहे मति सूतीहै ४४० सूरजका प्रकाश ज़र्रासानूर इलाही ऐसाहै । सर्दी गर्मी कुछनहिं उसमें मणि प्रकाशधौं जैसाहै ॥ बे नज़ीर बेचून नामहै भया न होइ न वैसाहै । मंगल समुझिली-जियेदिलमें है वह जैसा तैसाहै४४१ अद्भुतमूरति क्यों कहिजावै हियभावै जिय आवैजू । जिह्वाकहत बनतनहिंकैसेहु फिरि क्यों करिसमुझावैजू ॥ सैनबुझावै बूझ न आवै कर्मकिये नहिंपावैजू । मंगल सत्य भखत मुनिसाधू ज्योंगूँगागुड़खावैजू४४२॥सवैया ॥ जेनहिंजानितकैंगुणको मनतेकिमिनिर्गुणभेदविचारैं। बेचतनित्य बराटिकजे नहिंते मणि माणिकमोल उचारैं ॥ कर्मबशी भवभू-त जितेनहिं तेशुचि आतमज्ञान निहारैं ।मंगल खेल खिलारिन केसँग मूरुखके सँग जीतत हारैं ४४३ कंदखनैं इक मूलभखैं फल खायतपैं इकक्षीरअहारी ।ग्रीषम पावक मध्यदहैं तनशीत रहैं जलमें दुखभारी ॥पावसमें तजि छाहँ रहैं जप पाठकरैं भव भाग पसारी । मंगल चीन्हत आतम जोनहिं तौभ्रम मेटिसकैं न अनारी४४४ ज्ञानगली न चले कबहूं तिनको कस सिद्धि सतो गुण होई । वाणिसुने निर्वाण बिभासकि चक्रितचौंधि रहैं बुधि खोई ॥ चित्त गुबैं यहदंतकथा जपपाठ बिधान न पूजनकोई । मंगल दंत निकारत मूंदत मूढ़कि दर्पणको कपि जोई ४४५ ब्राह्मण पूज्य गृहस्थनके घर धायसबै जन पाइँपरैंरे । वे अपने मदमें अटके कछु ब्रह्मबिधान नचित्तधरैंरे ॥ जानत ब्रेदन भेदन भाव न भक्तिन ज्ञाननै याग बरैंरे । मंगल भेंड़िधसान गहौपग पंचकरैं जस तैस करैंरे ४४६बासव तापसनारि रमी नरदेवन ताकहँ दोष लगावैं ॥ कौशिक पातुरिके सँग मिश्रित क्षत्रियते शुचिबिप्र कहावैं । बिष्णु जलंधर नारिठगी सब बंदत कोउन

जीव लजावैं ॥ मंगल पंचकरैं सोकरौ नत सत्यकहै जगनिन्दक गावैं ४४७दीख अनेकगुणी कबि कोबिद जेकबिता सबितासम गावैं। आलिम फ़ाज़िल ग्येरु आरिफ़ आयत जौन कुरानबतावैं॥ बातनके निर्बाण लियेबहु ऊपर केर बिचार लखावैं।मंगल अंतरकी गति गावत आपुहि बूझत आपु लजावैं ४४८ जासन पूंछिय मुक्तिगली सो बदै जप तीरथ पाठ अचारा। जोकरि कोटिन थाकिरहे फिरि क्यों भटकै मन ज्ञान प्रचारा ॥ हैतनमें सोमरै नतरै जोमरै औतरै सोधरीर व्यकारा। मंगलसिद्धसमाधिन साधत बूझत आतम ब्रह्म बिचारा ४४९ जोसबके ग्रिर ऊपर सोहत तासुकथा किमिजात बखानी। जो नचहै तसहोत तबै इत बंधनमोक्षकथा न कहानी ॥ जायपरै शरणागतताकर जाकरनाम जपैं मुनिज्ञानी। मंगलभूलमिटै तिगरी अपनीपदवी लहि होइ अमानी ४५० आपन बूझ बुझावत आनहिं सो किमि बूझिसकै मतिथूला। सूरज की द्युति होत नहीं सिकता चमकावतहै प्रतिकूला॥ दंभ किमानत ज्ञान बिधानहिं जो सब भांति नशावत मूला।मङ्गलभेंड़ि चरावनहार चुकावत क्योंगज मोल अभूला४५१ ईश्वरकी रचना लखिकै बुधि होतठगीसिन बूझतभेदै। कोटिप्रपंच करै व्यवसाउ यथा जल छेदत होतन छेदै॥ बीज बिलोकि निहारत पादप चौंकिउठै लहिकै उरखेदै। मङ्गल क्यों करतागति जानत पंडित बैठि रहै तजिवेदै ४५२ जोकहनेति कृपानिधिकी गति जानत सोमति ताहिन बूझै। अंध कि संबल आपन देखत तापग पांवदिये मगसूझै ॥नौमन सूत इतै अरुझो सुलझावतहौं नितनित्य अरूझै।मंगल सोकिमि तोहिं उबारिहि जोपहिले अपनैरण जूझै ४५३ पाहननाव न मीरतरै किमि पंथिवढ़ाय लगावत पारा। क्योंभ्रमि मूरुखसों भटकै निधिआलर ध्याउ सदा करतारा ॥पंथअनेक प्रपंच बखानतहैं कृत आनहिं आनबिचारा। मंगल सत्यकहे नधनै इत भाखिय लोगनके अनुसारा ४५४ क्योंसुख देखिलहै मुदकी

मन चौदुख हेरिलहै अघभारो। देवनको शुचि आतम मानत दैत्यनके जड़ता वयभिचारो॥ एकस्वभाव सुधीतमधीनहिं ज्ञान किते केहिधाम बिहारो। मङ्गल सत्यबिबेक लिये निशिबासर नीरस एकप्रचारो ४५५ शुद्धसतोगुणज्ञान प्रकाशत बूझतही निरवाणकि बानी।पंडित शंखन घंट बजावत गावतहैं अपनी मतिमानी॥त्याग बिहाय सुत्रजिन डोलहि लोगकहैं जड़ताबश प्रानी। मंगल जौलगि बूझन आवत तौलगि नेम अचार प्रमानी ४५६ निर्गुणबस्तु बिचार भयेउर दंभ सबै तजिदेत सुजाना। को निरखै दिशि पूरब पश्चिम आगम वेद पुराण कुराना॥ तीरथ सूरतिमन्दिर मस्जिद धायमजारफिरै भ्रमसाना। मंगल जौलगि बूझ न आवत तौलगि जौनकरै सोप्रमाना ४५७ काग कि बाणि अशुद्ध बिचारत शुद्ध बखानत बोलत तोता। यावत चित्त द्विभाव लग्यो मनतावत शुद्ध अशुद्ध समोता॥ बोधभये दुबिधा मिटिजाय बिषय दधिमें पुनिखायनगोता। मंगलदेखुतु ज्ञान कि आंखिन जो इत सो उत क्योंहु न होता ४५८ सत्य असत्य अपार न भावत लोगनको ठगिके धनजोरै। बाहिर हंस स्वरूपकिये अरु अंतर लोभ सुकर्मनितोरै॥ नीरस बाद बदैनित निर्गुण मोहमयी मतिधर्म न चोरै। मंगलयाजगरूपप्रपंचकजानै बिना दुबिधा किमिछोरै ४५९ सिंधुकि थाह पिपील न पावत थाहत आपनजीवगमावै। ज्योंनभ अंत न मक्षिक जोवतकोटि उड़ान उड़ै फिरिआवै॥ लक्षप्रकाशकरै सिकताकण नाहिंदिनेश प्रकाशहि पावै। मंगल त्यों यह जीवन जानत ब्रह्म सनातन मूरति भावै ४६० क्यों मनबुद्धि गुणानिगुणै सुनि वेद पुराण कथा अनुमाना। मोहनिशा तजिदेखु दिवाकर आतमरूप अरूप प्रमाना॥हैसबमाहिंपरंतु न दीसत या भ्रमको न कथा न पुराना। मंगल बूझत आपनरूपहि बैठिरहै तजिमान अमाना ४६१ देह बिहाय न जीव बिलोकिय जीव बिहून रहै न शरीरा। जीवहि देहअहै तनजीवहि सूक्षमथूल दुधाकृतपीरा॥ बंधन मोक्षदुवौ

इतही तन बंधित जीव अबंध समीरा । मंगल ताहि न ज्ञानप्रले सहु जोनहिंजानत जीव प्रधीरा ४६२ संपुट पाठकरैं यकपंडित एक मृत्युंजय जापकरैंरे ॥ गोघ्रत दान दिवावत बाथल पर्वत अन्न लुटाव धरैं रे ॥ दान अजा घ्रनि एक करावत गाय पुजावत द्रव्य हरैंरे । मंगल हंस चलै परधामहि काहुके कर्म कछूनसरैं रे ४६३ एकहि लग्न नक्षत्र घरी तिथिबार ससंबतजाति बिचारिय । हैजनजन्मलियो यकठामहिं एकहि योगकरन्न सम्हारिय ॥ पंडित भोगक मूढ़द्वितीय धनीयक दूसर दीनभिखारिय।मङ्गल ज्योतिष बादसुआनहिं ईश्वरकी करणीकछु न्यारिय ४६४ दूरि ते देखत थूललगै लघु ऊंचचढ़े लघुनीचबसेरी । नैनदियेचश्मा लघुदीरघ हेरतहैदुबिधा मतिघेरी ॥ भेदनहीं कछुअक्षबिलोकिय जीवहि दोषनहै बुधिमेरी । मंगल आपन बूझहिमेंभ्रम पंडितके ढिगबुद्धिकिढेरी ४६५ ॥ छंद ॥ पंडितवेद ऋचादरशावै विविध अर्थकरि गावैंजू । आलिम फ़ाज़िल बड़ामौलवी आयत बांचि सुनावैंजू ॥ जिनवह वेदकितेब बनाई तिनकीगति नहिंपावैंजू। मङ्गलसमुझि लीजिये दिलमें क्यों अबज्ञान सिखावैंजू ४६६ पूजापाठ जापतीरथब्रत बर्णाश्रम मदभुल्लूहै । मंद्यबिवाद दंभ वानाकी पियेवचन गतिझुल्लूहै ॥ बिद्याधन नृपताकीआफूमूंद्रत चषकहुं खुल्लूहै । मंगलहै निर्गुणमत बिजया यकचुल्लूमेंउल्लू है४६७ बूझतही निर्गुण मतबानी सिगरीकथाभुलानीहै । प्रश्न आन उत्तरकुछ आनैदेत सुमति बौरानीहै ॥ जिसको पहिलेदुष्ट बखानै अबकहे पूरण ज्ञानीहै । मङ्गल बूझ बिना पारस मिल बूझत कीमति जानीहै ४६८ जो कुछ बेद किताब न जाना सो अब कौनुबतावैंरे । बूझभये अपनेउर अंतर बाहिर क्योंकरि आवैंरे ॥ जो कहने सुननेकी नाहींकोअब ताकहँ गावैंरे ॥ मंगल है परदेकी बीबीपरदा खुलैन पावैंरे४६९ ॥ सवैया ॥ सत्यकि प्राविट धीरज श्रावण ज्ञान जलीददया दिशि प्राची । वायु बिमोह क्षमामहि बर्षत बुन्द बिचारसुधी खगनाची॥ यालिविवेक

संतोष लहा सुख पाखँड अर्कअपर्ण कुराची। मंगलसंत किसान समोदित भाषतहै बरषायहसांची ४७० आँखिनसों सबको निरखैनहिं नैनन देखिसकै तेहिकोई। सूंघत बासु सबैनितनाकन वाकहँ बासित जातकहोई॥ शब्द अपारसुनै अतिद्वार न ताहि सुनोश्रुति कोटि धरोई। मङ्गल आतममोहबिवर्जितमोहन रूप बसैतन सोई ४७१ गावत ज्ञान कथाइतिहासहिबाणिसदा नहिं वाहिकथोई। स्वादसबै रसना बिलसै नहिंनीरसस्वाद लखैकृत कोई॥ हाथनवस्तु अनेकगहैकबहूं नहिंवाहि प्रवीणगहोई। मंगल आतममोह विवर्जित मोहनरूपबसै तनसोई ४७२ जोमन औचितको भरमावत शुद्धअशुद्धगली मतिखोई। बुद्धिहिमोहित नित्यकरै यदिबोधतहै तदिबोध न होई॥ सर्बव्यकार शरीर लगावत आपुसकष्ट न देखिपरोई। मंगल आतम मोहविवर्जित मोहनरूपबसै तनसोई ४७३ जाहि विचारि थकी मनकी गति चित्तचवाउते आपुचुपोई। ज्ञानकि मौन बिवेकरहो उतजातन दूसर मारग कोई। बुद्धिमहा जड़ता चितधारत जाहि नबूझ सुकोटिवदोई। मंगल आतम मोह विवर्जित मोहन रूप बसै तन सोई४७४दंभविवादकिये कितने पढ़िवेद किताब चुपाइरहोई। बूझिफिरो बहुज्ञानिनसों जेहियोग समाधि अपार भनोई॥ जासु कथासुनि बाहिर देखत भीतर खोजत बाहिरजोई। मंगलआतम मोहबिवर्जित मोहनरूप बसैतनसोई ४७५ आतमजोनिबसैतनमें तेहिनाहिं क्षुधा न तृषा कछु व्यापै। दुःखनताप जरा न ज्वरा नित आनँद रूप बिराजत आपै॥ मोहनहीं सुत वित्त तिया धन आपुस्वछंद स्वमंत्र सुजापै। मंगल बूझत आतमभावहि ब्रह्म सनातन कौनुप्रलापै ४७६ दृष्टिविलोकत रूपसबैनहिं दृष्टिहि रूप विलोकत प्रानी। बाणि बखानत वेद पुराणन बाणिहिं गायसकै अनुमानी॥ श्रोत्र सुनैबहुशब्द यथा नहिं श्रोत्र सुनै द्वितिये गुणखानी। मंगल त्योंनिज आतम है मन बुद्धिसकै नहिं ताहि बखानी४७७ दृष्टिहि ब्रह्मजो देखतहै सबब्रह्मकिधौं

बरबानि बताइय। कैश्रुतता जोसुनै सबबाद कि है मनब्रह्मसदा गति गाइय॥ बुद्धिहि ब्रह्म जोचीन्हत हानहिंपै भ्रम एक नहीं हढ़ताइय। मङ्गलसर्व सुपुप्ति मिलैं यहिते जड़ भासत ब्रह्म न पाइय ४७८ ज्यों कविता कविते उपजै कविता कृतही कविना-महि पावै। मेघहिते जल नीरते मेघ धनी धनते औ धनी धन भावै॥ वृक्षतेबीज बिधाहिते पादपको निरधार सुजान बतावै। मंगलत्यों तनजीवकथा कहतेनबनै यदिचित्तहि आवै ४७६ जो महिनीर शिखीपवमात स्वभानुनिशेश नक्षत्रकहावै। लोकदिशा बिदिशा चपलायन वेदसयज्ञ औप्राण बतावै॥ बाणिसदृष्टि त्वचा श्रुततामन भास अभास जोशुक्र गनावै। मंगलजीव बिलोकजिते सबमें यक आतम आपुलखावै ४८० आतमवासबिहूनन जीवन औदृढ़तानहिं देखिपरैरे। जातन आतमकोन निवासतोमृत्युग्रस्यो क्षणनाठहरैरे। कोटि उपायकरै व्यवसावहिबोल न डोल न सोनकरै रे। मङ्गलसन्तसदाशुचिभूतलजोनिजआतममें बिचरैरे ४८१ लोक अलोक रवै नभमें नभहू अहँकारमें बासकियेहै। शक्तिमेंहै अहँकार जोशक्तिसो चेतनब्रह्मको बिम्ब लियेहै॥ चेतनब्रह्म अनादि अपार बखानत बेदसदा अवियेहै। मङ्गल तासुप्रभा निज जोव सोआनँदरूप विलास हियेहै ४८२ तत्त्वनहीं महतत्त्वनहीं अहँकार न शक्ति स्वतंत्र विलासी। नित्यप्रकाशित पै नहिं भानुवसै सबठामन पौन प्रभासी॥ नैनन देखत बाणि न बोलत काननहीं सुनता सुखरासी। मङ्गलताहि न दूसर जानत एक स्वछंद सदा अविनासी४८३ जाहि बिचारि न भावत दूसर कोटिकथै कवि कोविद बानी। देखनहार विलोकत रूपहि अंधस्वरूप भनै अनुमानी॥ दोउनमें यक भाव न आवत यद्यपि पूरण वस्तु बखानी। मंगल बूझब आन बताउब आनहिहै समुझै शुचि ज्ञानी ४८४ जासन आपन ज्ञान बखानिय सो अनखाय रिसाय परैरे। मौनभली यहिकारण याजगसत्य कहे दुबिधा पसरैरे॥ ज्यों बक हंस कहै लघु धीनहिं हंस कहै बुध-

लोगुलरैरे । मङ्गल दम्भलिये उरज्ञानन ऊपर स्वांग अनेककरैरे ४८५ आवतहै मन उत्तम पूरुष एक अनादि त्रिलोक सजैरे । हर्षअपार तरंगउठै उरपैलर बाहिर कोन भजैरे ॥ लोग कहैंहम को समुझाउरे मङ्गल तू कस देव जजैरे । सोनहिं बाणिमें आवत कैसहु संत बिचारि विवादु तजैरे ४८६ कासमुझाइय रूपन रंग न धाम न नाम न मातपिता है । ज्योति न तत्त्वअमेय अमान अलिप्त अकथ्यपरे कविताहै ॥ ऊंच न नीच नथूलनसूक्षम आदि न अंत सदारमिताहै । मंगल बुद्धिनबूझिसकै तिहुलोक प्रकाश नहीं सबिताहै ४८७॥दण्डक॥सकल समाज चारिखानि जल कृत देखु जलपवमान कृतसोतौ भूताकासहै । भूताकाश अंतरिक्ष चन्द्रलोकसूर्यलोक सोऊतौनक्षत्र लोकपावत बिलासहै ॥ भपुर बनावेदेवलोकहीते देवलोक लोकगन्धरबसोतौप्रजापतिबासहै। प्रजापति लोकसो बनायोब्रह्मलोकपाय मङ्गल अलोकआगेब्रह्म चिदाभासहै४८८देवकरि जानैताको देवसों बिवेकहोत भूतकरि जानैताके भूतरूप बासीहै । बायुसोंबिचारैताहि भासत समीर समनाकरूपबादे ताको नभसों बिभासीहै॥भानु अनुमाने ताहि भावत दिनेशतुल्य सगुणप्रमाणै वाकेसतनबिलासीहै । एकरूप सोई न द्वितीयतात तीनिलोक मङ्गल बिचारि देखा सत्यअवि नासीहै ४८९ जड़वत रहत न जानत बिधानवेद हंसरूपकाग होत अचरजबानीहै । जानिबूझि त्यागिभूल सत्यपंथ लेतजौन तासुबात सबबिधि सुजन प्रमानीहै ॥ रतनको भावकोई जानत जवाहिरी नजानत बणिक जौन बेचत भवानीहै । मंगलसमस्तबस्तु प्रथम बिचारिदेखै फिरि परित्यागै सत्यभाव चित्तआनी है ४९०जानेविनु भाषत लजात जीवआपमूढ़ पूछत निकारिदांत अनहद बानीहै । ज्ञान औबिबेक किधौं बसत सुठामजाहिबदत प्रमाणभाषि कथाकि कहानीहै॥अलख बताय समुझावैसत्यभाव कहांअंधनसें राजाजाके एकआंखि कानीहै । मङ्गल सरूपआपदूसरो कुरूपदेखै मूढ़ता किचातुरीबखानैकोई ज्ञानीहै ४९१ एक

ग्रंथ काहूबिधि पाठकीन्ह अर्थ हीन ज्ञानिनसे बादकरै बोलि बोलि बानीहै । ज्ञान औबिचारकौन बूझतन शुद्धचित्त चारिओर मोह मायातन लपिटानीहै ॥ आपुसम दूसरन मानत बिमूढ़ संत साधुताकि बातदूरि बड़ो अभिमानी है । मंगलनमानै राउ सांचीतौ कहावतहै चिड़ियाके धामधरी जैसेकौड़ी कानीहै ४६२ सवैया ॥ तूमन जानतहै अपनीगति तापर मारग बामसिधावै जो बिभुताहि प्रज्ञासम जानत कोअब तोकहं ज्ञानसिखावै ॥ पावकनीर बुझावतहै जोपैनीर जरैफिरिकौन बुझावै । मंगलमूरुखसंत सिखावतसंत अमाय कहा बनिआवै ४६३ वेद विधान बतावत पंडित आपुदुचित्त बिषय लपिटानो । बाहिर उज्ज्वल अंतर श्यामरंगे पगचोवत हंसप्रमानो ॥ औरनको भ्रमकूपगिरावत आपुन मूरुख ज्ञानभुलानो । मंगलका कहिये छलबादिहि सत्यमिटाय असत्यहिसानो ४६४ एकनके प्रणपाठबिना जल पानकरै नहिंबातरकाहू । रोगग्रस्यो प्रणत्यागि पियोजल आनि परो उरअंतरदाहू॥ बक्रितपाठ तृषाअति ब्यापितजो जलमें नहिं पाठउछाहू । मंगलदंभ परित्यजि जोकृतसो सतकर्म बदैबिबुधाहू ४६५ अंतरश्रीहरि ध्यानबिराजत बाहिरकाज बिषयरत जोई । ताकहँसंत बखानत कोबिद पापअपाप ग्रसै नहिंकोई॥ जाबिधि भावरहै जगताबिधि कर्मसुकर्म नजातबदोई । मंगल संतसमान सुधीनहिं भावद्वितोयधरे हियसोई ४६६ चीन्हत सूरज पायसबै दिनमें निशिचन्द्र प्रकाशहिपाई । अस्तभयेदुहुं अग्नि प्रकाशसों पावक नाशत शब्दप्रभाई ॥ शब्दबिहून नचीन्हिसकैतब आतमकी बुधिचेतनताई । ताबल लोकतिहूं पहिंचानत मंगल आपनिबस्तु पराई ४६७ शक्तिदशौतन इंद्रिय स्वौंचिके पांचहु प्राणसमेटि चलैरे । चित्त अहंकृतलैमन बुद्धिहि स्वप्नप्रदेश रचै स्वबलैरे ॥ जाग्रतकी सबबस्तु दिखावत देखि प्रसन्नत सत्यछलैरे । मंगलथाकि सुषुप्तिगहै इनहूं सबको तजि तौन थलैरे ४६८ कोटिकरौनहिं नैनबिलोकहि कान सुनैनहिं

जीभवखानै। नाकनसूंघ त्वचापरसैनहिं आनहुं इन्द्रिय कर्मन ठानै॥ चिन्तहि चित्तनहीं अहँकारित औमनधावन बुद्धिप्रमानै। मंगल चेतन आतमहीन नयौंसिगरे नहिं आपुहिजानै ४९९ जागि खिलारिचलो पुनि खेलहि तासुप्रताप सबैजन जागे। शब्द सुनै परसै अरु देखत चाखत सूंघतही अनुरागे॥ कर्म कि इंद्रिय कामकरैं निजबुद्धि मनादि स्वमारग लागे। मंगल चेतनआतम आपुहि ताबिनहैं जड़ता सबपागे ५०० आपन तेपुर तीनि पसारत ज्योंमकरी निजजाल पसारै। नेकघटै नसमेटिबढ़ै तिमि अंतसबै हरिअंग बिहारै॥ संत असंत गुणीअगुणी सुरदैत्य कथा उतकौन बिचारैं। मंगल एकहिभाव कृपानिधि जाननहार किआपुहिहारै ५०१ ब्रह्मसनातन ज्योति निराकृति पावकभानु निशाकर नाहीं। रत्ननक्षत्र न बस्तु प्रकाशित प्राणप्रभासन भाति सकाहीं॥ देखत जीवलहै पदआपन ज्यों परमातमकी परछाहीं। मंगलकीउपमा जोअनूपम बैठिचुपाइरहौं घरमाहीं ५०२ छन्द॥ पहिला चक्र गुदाकेऊपर द्वितिय शिश्नके आगैहै। नाभिस्थल तीजा चौथाहिय पंचम कंठलभागैहै॥ षष्ठम त्रिकुटीधाम अनाहद ध्वनि जहँसुनि सुखजागैहै। मंगल भंगहोत नहिंकतहूं यकरसदश बिधिलागैहै ५०३यहध्वनि सुनतपरम पदपावै निजआतम अनुरागैहै। पुनि त्यहिनाहिं अविद्याव्यापै बिधवा लहत सुहागैहै॥ एकभाव चहुंखानि बिलोकै चीन्हत हंस न कागैहै। मंगल चिदानन्द महि बिचरै नहिंदाता नहिं मागैहै ५०४ जेहिंध्वनि सुनी अनाहदनाहीं हृदय कमलमेंडोलैहै। विविध भाँति दुखसुख संसृतमें खोवत आयुअमोलैहै॥ मायामोह ग्रसै मनवाको दुबिधगिरा गतिबोलैहै। मंगल जौलगि आपुन जानत तौलगि नरपशुतोलैहै ५०५॥ दंडक॥ अमित विधानश्रुति आगम बखानदेखि बुधिथिर होतनाहीं दुबिधाके थानमें। जानत प्रकाशरूप मानत बिभासजाहि मोहतबिमोह आपुमनबुधि प्रानमें। तीनिदेह पंचकोष.पांचप्राण भूलभाव एकआपु द्वितिय

न आवत सुज्ञानमें। मंगल प्रवीनसोई एकभाव जाकेचित्तनातो भ्रमबाट फिरै मायारूपी थानमें ५०६ ज्ञानिन में ज्ञाननाहीं ध्यानिनमें ध्यान नाहीं बादिनमें बादनाहीं सत्यबूझ आनेते। जापिनमें जापनाहीं पाठिनमें पाठनाहीं योगिनमें योगनाहीं आतमा समानेते॥ त्यागिनमें त्यागनाहीं भोगिनमें भोगनाहीं दुःखिनमें दुःखनाहीं अंतज्ञान जानेते। देहिनमें देहनाहीं गेहिनमें गेहनाहीं नेहिनमें नेहनाहीं शुद्धभाव मानेते ५०७ जाके नामहोत ताकेरूपहू बिशेषहोत रूपवान जौन वाकी नामसे चिन्हारहै॥नाम रूपहीन ताहि जानत न बुद्धिभाव कोटिभांतिभाषिवदै मनको बिचारहै॥ जहांलग रूपनाम तहाँलग मायाभास मायाहीन पारब्रह्म अकथ अपारहै। मंगल भ्रमावै मोह पाखंड कि आशपाय गुरुताद्दिखावै शिष्यबोधै करतारहै ५०८ आतम न बूझैआन दंभमें अरुझैचक्षु आपनी न सूझै कहै आरसीको दोष है। धायजाय चारिओर तीरथानि भूमिछोर घूमिआवै बुद्धिभोर नाहीं उरतोषहै॥ आनउपदेशैजीव ईशब्रह्म तत्त्वमसि आपुभ्रम भेषैरहै जीवमोहरोषहै। मंगलबखानै जैसेज्ञानको न चित्तभास जानत अनित्यनित्य पायोकहां मोषहै५०९ ऊरधते ऊरधबिराजै अधअधहूते आगेहूते आगेपाछे पाछेहूतेगाइये॥थूलहूते थूलसोहै लिंगहूते लिंगरूप आतमाको आतमा प्रसिद्धचित्त लाइये। देवन को देवसुरतीनिहूंको जन्मदान गुणतत्त्व वेदगनि अकरगुणाइये। मंगल बिराजै सबठामनमें न्यारोसोई मनकीगुनानिसोंन ताको भेद पाइये५१०एकते अनेकरूप चारिखानि देखियत अंत एक रूपहोय साखीवेद गावैहै॥ जालाज्यों पसारैकीटमकरी अपार तात खाततताहि क्षणहीमें सुरुचि स्वभावैहै। मूढ़ताको भावजाके मानत न पारब्रह्म जगत अनादिबादि ग्रन्थको चलावैहै॥ मंगल नभूलै ज्ञानमानसंत शुद्धभाव एकमानि सत्यसिंधु दृढ़ता दृढ़ावै है ५११॥ सवैया॥ जौलगिजीवन याभव तौलगि बंधुप्रियासुत मातपिता है। संमति मित्र अवास महीधर वाजि सुबाहनस्यो

रमिताहै ॥ आपनआन बतावत बूझतमूढ़ प्रबोधसुधी ममिताहै। मंगलअंत शरीरछुटे गतिजीवकी कौनकहै कविताहै ५१२ स्वर्ग गयोयदि नर्कपर्यो परतंत्रभयो नहिं आतममानिय। जोपैस्वश्रयप्रमुक्त कहो बुधतौ नहिं जीव स्वतंत्र बखानिय ॥ है परतंत्र स्वतंत्रनहीं यकभाव बखानत जो अनुमानिय। मंगल लोगकहैं कविकोबिद कर्म बिवश्य भ्रमोशुचि बानिय ५१३ आनँद रूप निरानँदनाहिंन बंधनमोष दुवोके परेहै। जीवत है न मरै कतहूं बश्यकर्मन ऊपर जात तरेहै ॥ जो नृप आपुहि सेवकजानत सो भृतकर्म स्वशीशधरे है। मंगल बूझभये नहिं सेवक साहिबराज स्वतंत्रकरेहै ५१४ सिद्धस्वरूप न साधित होवत ब्रह्म न मानव रूपबनावै। मोहबिलास शरीरलहै यह सत्य प्रमाण महामुनि गावै ॥ सोइकहै प्रतिशक्तिबिमंडित जौनुकरै सब सोबनिआवै। निर्गुणसर्गुण दोउनमें भ्रम मंगलके चितचेतन भावै ५१५ जो गुणतीनि लिये सुरतीनि बिरंचि सविष्णु महेश कहावै। तेतिहुं रूपभये यकठाम बिराटशरीर दशौदिशिगावै ॥ मृत्युबिरंचिसरी स्वर्धामपताल सदाशिव अंगसुहावै। मंगलत्यागि त्रिदेवन आपत कोअज अव्यय ब्रह्मलखावै ५१६ पांचपचीस असे उरमी पट चित्तअहं मनबुद्धि लुटेरी। एकद्वितीय मतोनहिं मानत जीवहि घेरिरहे चहुँफेरी ॥ ज्योंखग नित्यनभै भरमै नहिं आवत अंत न आपुबसेरी। मंगलजीव अबध्य स्वतंत्रित थाकतइन्द्रिय सूरति हेरी ५१७ क्योंमन बोधलहै अपनो दुबिधा कि कथाकबिपंडित गावैं। ब्रह्मनिरीह निरंजन भाषि बहोरिबदै नरकाय बनावैं ॥ मोहबिबर्जित पूरणरूप बतायकहै बननारि ढुंढ़ावैं। मंगलमौन भलीनहिंतर्क चुपानेबनै न कहे बनिआवै ५१८ जौन चहै सो करै करुणानिधि हैसबशक्ति मयीजगजानै। रूप अतर्क अकथ्य सकथ्य बिमूढ़न पण्डितजो अनुमानै ॥ जन्मधरै न अजन्म रहै प्रतिधाम निवास अवासबिधानै। मंगलज्यों समुझौतस आवत ताकहँ क्योंकरि बाणिबखानै ५१९ बाणिनमेंन अबाणिनमेंमुनि

ज्ञानिनमें न बिलोकि परैरे । तर्कनमें न अतर्कनमें शुचिबक्रनमेंन अबक्रचरैरे ॥ मूढ़नमें न अमूढ़न में गतिगूढ़नमें न निगूढ़ धरैरे । मंगलयत्र बिचारियतत्र न औ सबठामनमें बिहरैरे ५२० जो मनतोहिं सिखावतज्ञान अनादि अनन्त बिधान बतावै । ताकहँ तूनहिं चीन्हत मूरुख कोटिन योजनलौं फिरिआवै ॥ तीरथ मूरतिमें हरिखोजत दोषअदोपनमें भ्रमखावै । मंगल लोग कहैं यहिकारण मूरखहै मनतत्यनभावै ५२१ पांचहितत्त्वनते उपजैं सबजीव चराचर देखबिचारी । बृद्धिलहैंसुख दुःखसहैं बहुज्ञान बिधानकरैं व्यभिचारी ॥ अन्तसमय मिलि जातसबै घरतत्त्वहि में मुनिबाणि पसारी । मंगलबाण अबाण विकल्पन भूलकि पद्धति भूतलन्यारी ५२२ यद्यपिजीव बनस्पतिहूमहँ पैमनहैतिन केउरनाहीं । पक्षिपतंग चतुष्पद नागमें जीवसही बुधिमा तिनमाहीं ॥ उत्तमकाय मनुष्य धरातल जामधिबुद्धि मनादिलखाहीं । मंगलताकहँ पायनध्यावत आतमहै जड़ता परछाहीं ५२३ तरुवरचे गुणदेवअदेव बनस्पति कीटपतंगबनाये । पक्षिसरीसृप औ पशुखेचर आदिबिनाश्रम सर्बउपाये ॥ पैन प्रमादित भोकरतातव बुद्धिस्वरूप किधौं मनुजाये । मंगल तादिन ते करतार चराचर जीवनहीं निरमाये ५२४ स्वेद प्रसादते स्वेदज होवत चीलढ़लीख जुआँ जगजानै । अण्डतेअण्डज कीटखगामि पिपील सरीसृप आदिप्रमानै ॥ भू जल भानु प्रयोग बनस्पति उद्भिज होतसदा निरमानै । योनिज मानवऔ पशुसम्भव सो नरनारि प्रसंग न आनै ५२५ जाग्रतमें मनआन बिचारत स्वप्न समय कछु आनकरैरे । सो तजिदेत सुषुप्तिप्रचारत आपनहूं सुधिते बिसरैरे ॥ तद्यपि ज्ञान न आवत है चित क्यों भरमाय भुलाय मरैरे । मंगल सूरज तापनके बश क्यों कहिये कथनी बिगरैरे ५२६ आपनि बुद्धि अदोषित चाहिय बह्मसबै थलभाषि परैरे । जोदृढ़ता बुधिमें नहिं तो जनुचित्रित पूतरि रंगभरैरे ॥ मूढ़ बिलोकि प्रणामकरै बुध देखिगुणी गुणकोपकरैरे । मंगल काकहिये शिषपा

निज बूझत भाव न आन धरैरे ५२७ दायक वृत्ति समर्थ्य कृपानिधि पण्डित सज्जन वेद बतावै। देतसबै अनयास सदानर जानि न तोप स्वचित्तहि लावै ॥ नित्यभ्रमै प्रतिठाम बिमोहित पालक भूलि न जीव लजावै। मंगल ध्याउ सदा परमातम जो सब ठामनमें छबिछावै ५२८ ॥ दण्डक ॥ शैवी शिव ब्रह्मआदैं जैनी अरिहन्तकहैं बौधकहैं बुद्धआदिब्रह्म अवतारहै। कर्महीप्रधानभनै जगवद्धमीमांसा ज्ञानी न्यायीकहैं त्रिपुरको एककरतारहै॥ बदत वेदान्ती सत्यब्रह्म अजयोनि योनि सगुण उपासी गावैंराम राम सारहै। शक्ति शुचिवादी भावैं प्रणव प्रधानरूप मंगलअसत्य नाहीं दुबिधा अपारहै ५२९ वेदकी न आनैं न कितेबकी बखानैं कछुआन अनुमानैं धन्य सन्तनकी बानीहै। सत्यन दृढ़ावैं न असत्य मानलावैं गुणिआनहीं सुझावैं सूधीउलटी कहानीहै॥ जाहि बूझआवै ताहिमोहन सतावै आपुरंग रूपपावै नाहिंरंगति रँगानी है। मंगलप्रबोध होतबीन्है सत्यनात गोतचढ़ै धायज्ञान पोतपार बाट जानीहै ५३० ॥ गोपालछन्द ॥ यक उपदेशै लखैनआप। प्रणवमंत्र अजपाको जाप ॥ योग बतावैकरै न सोय। मंगलबुध अविवेक न होय ५३१ पण्डित आगमकरै बिचार। ज्ञानी क्षरअक्षर बिस्तार ॥ पढ़ै मोलवी सुरुचि कुरान। मंगल आपु नपावै जान ५३२ कायरबाना बीरबनाय। समरभूमिसो किमिठहराय॥ त्यों पाखण्डी भवदरशाय। मंगलसन्त छलीनहिं जाय ५३३ अग्निबिनाशै जल बहुताय। बड़वानल नहिंसकै बुझाय॥ मूरख कोदम्भी छलिखाय। मंगलज्ञानी ठगो न जाय ५३४ ऊपरहंस अंतरितकाग। मेउ मेउ बाणी भषनाग ॥ माला तिलकबिभूति निचोल। उदर निमित्त बचन चंडोल ५३५ वेदकिताब न जानै जाहि। पाखण्डी दरशावै ताहि ॥ अलख बताय लखावै रूप। मंगलज्ञानी मूढ़ अनूप ५३६ बाणीमेंनहिंब्रह्मसमाय। कोटिपुराण कुरान कथाय ॥जोहैसो न कथा इतिहास। मिथ्या मायारूप बिलास ५३७ काष्ठान्तर पावककोबास। पवननीर करिसकै न

नास॥ त्यों शरीरबिच जीवप्रवीण । कालगहे कछु परै न क्षीण ५३८ वेद उपनिषद आगमजौन । श्रवणकियो कबहूं न हिंतौन॥पढ़ाएक हैभाषा ग्रन्थ । मंगलबादी बिचरत पन्थ ५३६ ब्रह्म लखावैंमोह मलीन । शुद्ध सतोगुणगहे गलीन ॥ निजविस्तार भेदनहिंपाव । उपजत मरत स्वभाव अभाव५४० त्यागी भयो न त्यागे दम्भ । रचि पचि मूढ़ बालुकृत थम्भ ॥ गेहिनमें नितहोतगृ हीत । पवन उड़ावत बालूभीत ५४१ गुदड़ी अलफी जटा लँगोट ।नग्न अभूषण तरुवर ओट ॥ आयु बिताई तनु दुखपाव । मंगलहाथ कछूनहिंआव ५४२जेते गुणगण ज्ञानबिलाश । जिह्वाग्रहिलूकरत प्रकाश ॥ सीकित धरेरहैं तनुमाहि । जोसमुझावै बूझैंताहि५४३ ब्रह्मज्ञानी जोजगआहि । बन्धन मुक्ति न व्यापत वाहि ॥ जीवोद्धारण बोलै बैन । बैर प्रीति दुविधा मनहैन ५४४निर्बाणीनिर्गुण कृतबाद । जीभ चबाये लगत न स्वाद ॥ जोपुरुषोत्तमध्यावतसत्य । मंगलमेटत जन्मविपत्य५४५इष्टदेवफल देतसमोद । फल आशा बन्धन चहुंकोद ॥ निष्फल वृक्षन सेवतकोइ । सेवत जौन निराशा होइ ५४६ जाहिन गुरु न शिष्यव्यवहार । क्रिया कर्म जबनहिं कर्त्तार ॥ तबधौं द्वैतकिब्रह्मअकेल । शून्यकिधौंयह अद्भुतखेल ५४७ निराकार कोउभणै अकार । सबठांकोउ बैकुंठ बिहार॥शिवनारायणज्ञानविचार । मंगलहोतनहीं निरधार५४८ प्रथमैं ब्रह्मकि मायाहोय । बुधजन हमैं बतावैं सोय ॥ जोपैबदै ब्रह्महैआदि । मायाबिषय रूपिणीआदि ५४६ तोविज्ञान कहां दरशाय । समुझत दुविधाकथी न जाय॥मायानश्वर बदैप्रवीन । चेतन पुरुष अलिप्त अधीन५५०मायानाशि पुरुष मिलिजाय । चौदहभुवन विभूतिनशाय । कौनबखानै जानैताहि । मंगलयह मन मतो न आहि ५५१ मारग एकचलै संसार । नहिं द्वितीय कारणविस्तार॥वहैपन्थ मुनि धारणकीन । चीन्ह्यो आतम परम प्रवीन५५२कथै विपर्यय बाणीएक । मूरख क्योंकरिसकै बिबेक ॥ एकअनाहत बजतप्रकाश । मंगलबाणी बुद्धिबिलाश ५५३

क्षुधापिपास विवशदिनरैन। प्रतिथल फिरतप्रचारतवैन॥ आप-निमति थिरता गतिहीन। मंगल परमहंसपदलीन ५५४ जोन पुरुष पदज्ञानैआप। वृथाप्रणव अजपाकोजाप॥ अविवेकी सबके घरखाय। श्वपचअहै तेहितें अधिकाय ५५५ यत्र तत्रकरि वृथा बखान। प्रतिकूलित वाणीनिर्वान॥ आपुविषय रसभोग प्रयुक्त। मंगलतोजगजीवन मुक्त५५६ पयघृत मिलित भोज्य मिष्ठान। पावैं सदाप्रकाशैं ज्ञान॥ व्यापैकाम वैतकिनहोय। निजकर रेत गिरावत कोय ५५७करै बड़ाई आपनि आप। प्रतिथल मिथ्या वचनप्रलाप॥ जोसुगन्धिसो आपुबसाय। ग्रन्थीमुख चीन्होनहिं जाय ५५८ ॥सवैया॥ यातनवृक्ष सवैपरमातम जीव खगामि सदा सुखदाई। भोगविलास किधौंफल रूपक जीवगहै मन बुद्धि सभाई॥ तावश जीवनमुक्ति लहै भवभूतल यों श्रुतिवाणि सुनाई। मंगलहै परमातमशुद्ध भषैफल नाहिंन जन्मतआई५५९ जोमतिदेखिय दृष्टिपसारि कै तामहँ पाखँड देत दिखाई। शुद्ध सतोगुण कोउगहेनहिं आपनि आपनि चाहबड़ाई॥ एकद्वितीय को तुच्छबतावत कोबड़छोट कहै भ्रमताई। मंगल ठीकन आवत चित्तहिं ब्रह्मसनातन देतलखाई ५६० वेदबदै सबकेशिरपै पुरुषोत्तमहै अविनाश अकेला। बाथल दीनमता नरनारिन पंडित आलिम औ गुरुचेला॥ जानत वाकहँ दूसरनाहिंनहै अनुमान महान अपेला। मंगलबुद्धि भलैनहिं सूरति होतप्रकाश न भानुनवेला ५६१ ॥ छन्द॥ जिनप्रकाश परछाहींदेखी तिनकी मति बौरानीहै। कोटिज्ञान पण्डित समुझावै कौनसुनै विपरानीहै॥ सबवाहिर अलमस्तबिराजै आनँदमय विज्ञानीहै। मंगलकहा बुझावै औरहि अद्भुतकथा कहानीहै ५६२ ॥ सवैया॥ नामनहीं फिरिकाकहि गाइय धामनहीं कितवास कहौंरे। देह नहीं केहि ध्यानबखानिय दैतनहींजप एकलहौंरे॥ चीन्हतनाहिं जोनेह बताइय वस्तुनहीं करकाहि गहौंरे। मंगल अद्भुतवाद बड़ो इतहौं मनवैठि चुपाइरहौंरे ५६३ तूमन जौनकहीतोकरी

हमयोजन केतिकधाय चलेहैं। शासन वेदकिताब लियेब्रतती रथमूरतिपूजि भलेहैं॥ छंदकवित्त रचे नवभांति बिषयरसभोगसु मंत्रछलेहैं। मंगल बूझभये तजिपाखँड जानिवृथा निजहाथ मले हैं ५६४ मुक्तिकहूंनहिं बन्धनहै मनतू अबहीं भ्रम पद्धतिधारे। बंधनमोक्ष कहावत नामहि नरकरुस्वर्ग वृथाहि बिचारे॥ जीवन मुक्त स्वरूपतुहीं लखुज्ञानके अक्षसुदृष्टि पसारे। मंगल बूझ भये दुबिधागतहै अरुनाहिं दुबौभ्रमटारे ५६५ क्यों निरदोषरमै भव बीथिन पापकुदृष्टि दुराश्रवसेरा। कोटिव्यकार बिथातनव्यापत मानतहै नहिंकाम कोचेरा। जाहिबुझाइय ज्ञानसुमारग सोसुनि जानत दुःखघनेरा। मंगलआतम कौनबिचारत दंभ बिवाद किये भटभेरा ५६६ मोह बिलास बिषय परिहास समोदित तूमन चित्तपधारे। आवइतै खलखांड़ खरीदन खारिखरीदत ज्ञान बिसारे॥ संतस्वभाव न भाषतहैउर दुष्टक्रिया हितसों कृत न्यारे। मंगलऊपर छापलिये स्वकमुक्तिन होइवृथा उपचारे ५६७ कौन गृहस्थ जो इंद्रिनकेबश कौन प्रवीण जोबूझत बानी। कौन गुरू जो बुझावत आतम शिष्य कोहै जो स्वभाव अमानी॥ ब्राह्मण कौन जो हैसमदी पुनिकोन महंत स्वश्वासनथानी। मंगल संत को है जोअमान नहीं दुबिधा ज्यहिकी मतिभानी ५६८ जेतिक लोगचहैं मन भूतल ज्ञानबिना नहिं देखि परैरे। जासन मूढ़ कहो सो लड़ै उठिसाधुकहे हित सों बिचरैरे॥ त्यागत है नहिं मानकिपद्धति ज्ञानिनको सँगकौन करैरे। मंगलतूबड़ मूरखया जगमान कुमारग पांवधरैरे ५६९ मानगहे भवबीथिन भ्रामिक आनहिये मुखआन कहैरे। वेदकिताबन अक्षरजानत आतमभाव हि धाय गहैरे॥ आलसकेबश होतपरिश्रम नाहिंन भिक्षुकभाव लहैरे। मंगलशिष्य कियेधनके हितदंभ ग्रस्यो नहिं सत्य अहैरे ५७० शीतलसंत स्वभाव सदानहिं क्रोधकिपावक चित्तप्रजारै। भोगबिषय किन आश हृदयनहिं कामबतास शरीर प्रचारै॥ बैर बिमोहन व्यापत जीवहि बुद्धि मनोहर बाणि उचारै। मंगल

डोलततोर विमखिडत खंडित दंभविवाद प्रकारै ५७१ वाद विपयनहिं भावतहै नितज्ञान विवेककथै शुचिवानी। मौन्य रहै नतध्यान हृदयहरि शुद्ध सतोगुणधी निरवानी॥ हंस दशा जड़ चैतनद्वैविधिपखिडत बालक चालिनजानी। मंगल आतम ध्यान सदारति हूसरिबुद्धि न चित्तसमानी५७२सोहतनित्य स्वआसन तोषित शुद्धसमाधि लियेपटभांती। जो बिचरै भवती मुदसंयुत बूझत सुंदरजाति कुजाती॥ तीनि निशान बसैगृह काहु के वेद कि सीख सिखावत जाती। मंगल द्वै तन एकगहे नहिं निन्दक और प्रशंसक खाती ५७३ जायमिलै सतसंगति संतन धावगहै जनसाधु विचारी। आपनको सबते लघुजानत आनन को शुचि ज्ञानविहारी॥ मातत्रिया गणतात सबै नर ऐसहु एक गुणीन अनारी। मंगलसंत महीतलहैं असकोनु कथै महिमा बड़ि भारी ५७४ संतनकी नितमोर प्रमाणहै संतनको नित नौमि सनेहा। संतनको जनसंततहौं मनसंतत के पदमो उरगेहा॥ संतन की महिमा चितभावत संतनके हित आपनिदेहा। मंगलदम्भिन ते गुरुदूरिहि राखियमोहिं अहैप्रणएहा ५७५ कारणब्रह्म अहैभव को उपजै तेहितेपुनि ताहिसमावै। कोउभणै जगकारण कालहै आपु रचै पुनिपालि मिटावै॥ होतस्वतंत्र वदैयक कोविद अन्त स्वछन्दनशै ममभावै। मंगलभूल मिटायसकै नहिं कोटि पुरान कुरान सुनावै ५७६ एककहै जगकारण कर्महि एकजु पांचहि तत्त्वबतावै। हैकरतार सहीयक भाषत पैनबनावनहार गुणावै॥ गावतएक कियो प्रकृती जगअंत समेटि स्वअंग मिलावै। मंगल भूलमिटायसकै नहिं कोटिपुरान कुरान सुनावै ५७७ कंचनगर्भ तेहै उपजो सबओ परिणामतही मिलिजावै। योग सबैकर एक कहै भवकारण मिश्रितवस्तु दृढ़ावै॥ आपनिवाणि भली सबही यदिमुंगहुहै तदिदंडन पावै। मंगलभूल मिटायसकै नहिं कोटि पुरान कुरान सुनावै ५७८ योगियती तपसी बुधमौनि उदासि कवीश्वर ज्ञानप्रवीनो। देवअदेव मुनीश्वर मूरुख भूपति रंकधना

बलहीनो ॥ संतगृहस्थ अधार्मिक धार्मिक आतमज्ञानि समाधि हिभीनो। मंगल कोउ रहा न महीतल कालबली सबको तन छीनो ५७६ बिष्णुभजै चहुध्याव शिवै चहुशक्ति सनातन ब्रह्म बिचारै। जैन बनै चहुबौद्ध गुणै अपपंथचलै किस पंथ बिहारै॥ न्याय पढ़ैचहु सांख्यगढ़ै चहुदीन मुहम्मद को चितधारै। मंगल कोउ बचै न महीतल कालबली सबको भषिडारै ५८० यातन प्राण स्व ब्रह्म स्वरूप चितानंद मंगल साक्षिकहावै। ताकर दूत बसै मनमोहन बाणिसुभोज्जन रूपलखावै॥ दृष्टि सुमंत्रदै नित्य बिचारिय पायक इंद्रिय कर्णगुणावै। मंगलजो अस जानि भजै निज आतम सोपरमानँद पावै ५८१ आपन भाव न जानतने-कहु कर्म अपारपसारकरैरे। हैतिनको फलबंधन मोष न जन्म अनेकन बार धरैरे॥ ज्योंकृतकीट कुशालि स्वमंदिर आप हि मूरुख बंदिपरैरे। मंगलकर्म अकामकरै जगधर्मबढ़ै तबजीव तरैरे ५८२ दृष्टिविहून शरीरक्टुटैनहिं बाणिबिना न कलेवर नाशै। हीनित घ्राणतजै तनक्यों कर्णेन्द्रियहीन नकाय बिनाशै॥ हस्तपदा दि निहायरहै बपु नेकनहीं जो मलीन प्रकाशै। मंगल प्राणचलै तन नाशत याहिते प्राण स्वतंत्रित भाशै ५८३ जाय सुषुप्ति बसै जबप्राण तबै सब इन्द्रिनकी गति नाशै। ज्ञानकि कर्मकि जेदश भांतिहैं जानैनहीं तन कोटि कुत्राशै। बुद्धि मनादि न भासिपरैं कित जाय कियो दृढ़ चित्त निवाशै। मंगल चेतत प्राण जगैतब याहिते प्राण स्वतंत्रित भाशै ५८४ बिष्णु बिरंचि महेश खगेश दिनेश निशेश फणेश सुरेशा। रामसवशाम बृहस्पति शुक्रपराश-रव्यास हली मिथिलेशा॥ देतमशिष्ठ सुधी प्रहलाद महामुनि आनहुजे शुचिभेशा। मंगल सर्व गृहस्थ सनाम भजैंनिजआतम भाव सुदेशा ५८५ कौनु गृहस्थदिगंबरको जोपै आतमध्यानर-है चितएका। बंधन मोषकि चाहत जीवहि आनँदमूरति शुद्ध बि-वेका॥ याथळ वाथल भाव द्वितीय न शुद्धसतोगुण पूरणटेका। मंगल जीवनमुक्त वहै मन दंभिनकेतट घाद अनेका ५८६ मुक्ति

कोदानि वहैपरमातम बंधनदानि वहै करतारा। जन्मकोदानि अजन्मको दानि अधोरधदानि नआनबिचारा॥ आपनि भूलमिटायभजै करुणाकर नामजो सांझ सवारा। मंगल जीवनमुक्त वहै शुचिज्ञान अभेद गहे श्रुतिद्वारा ५८७तू परमातम सत्यसदा परिपूरण औरत्रिलोक असारा। तूसतता सतिभासत नश्वरबिकृतसर्व तुहै अविकारा॥ कारण कारज एकन होवत यद्यपिवेद वदैयकतारा। मंगल धन्य अहै परमानँद जाकृत अद्भुत लोक पसारा ५८८ जाग्रतमें भवकाजकरै निज शक्तिसबै तनइन्द्रिय फेरी। स्वप्न बिलोकत हैमनद्वारअलिप्तरहै सबठामअहेरी। जाय सुषुप्तिमें साखिरहै जब इंद्रियसर्व अचेतन हेरी॥ मंगलसोतन आतम जानिय जाकहँ वेदवदै हरिटेरी ५८९ जेतिकव्याधिबिषयरस होवत सोनहिं ताहिलगै भवमाहीं। संसृतकेदुख औसुख बंधन कोटिविधान सतावत नाहीं॥ मिश्रित इंद्रिनके सँग देखिय पैनहिं लिप्त अलिप्त सदाहीं। मंगल सोतन आतमभाषिय बूझतजाहि सबै भ्रमजाहीं ५९० जानत तीनिहुंलोक बिभूतिहि आपनथान रहैन चलैजू। चित्त अहंकृत धीमन का भरमावत है बिषयी कुथलैजू॥ काहुसमय शुभज्ञान सिखावत सार असार कलै सकलैजू। मंगल सोतन आतम जानिय जौनगहै अफलै सफलैजू ५९१ सूक्षम है मृतिकागतिते जल नीरतेसूक्षम पावकगाइय। अग्निते सूक्षमवायु बिलोकिय मारुततेनभ सूक्षमपाइय॥ व्योमते सूक्षम शब्दसदा पुनिशब्दते सोअहंकार लखाइय। मंगल सूक्षमहै अहंकारते सोकिनि बुद्धिप्रत्यक्ष बताइय ५९२ देश बिदेश दिशा विदिशा अध ऊरध में भरिपूरि निहारिय॥ है सबमें नबिचारत पंडित मूरुखको दुबिधा चित धारिय। पैनमिलै पलकाहु यथानभ कोटिउपायनसों निरधारिय॥ मंगलकर्म करिगाइसके श्रुतिनेतिवदै यहिहेतु बिचारिय ५९३ जाहि बिलोकिय याभवमें त्यहिके सुखचाह उरस्थल व्यापै। याजनको सुख भोग बिषयकर जाहिलहे अघजात सदापै॥ जानत गूढ़न बूझत

मूढ़ फिरै मतिहीन न पाठ न जापै। मंगल संत सदानँद मंडित
आननहीं सुखमूरति थापै ५६४ केतिक मारगमें भरम्यो मन
बोधभयो न बिना गुरुपाये। आपनि आपनिबाट चलावत दूसर
पंथ निहारि लजाये॥ क्यों फिरि आवत तोष हिये जित दंभ
तहां न विवेक सुहाये। मंगल मिश्रितकीगति बूझत सूलमिटै
हरिकेगुण गाये ५६५ जोमन औतनमें नहिं लागत सो उपदे-
शत पंडितमोही। आपनभूमि अनेक भ्रम्योभ्रम दूरिभयो नरहो
मतद्रोही॥ क्योंहम मानस जानत जाहिन चेतनको जड़रूप
बटोही। मंगल जानेबिना शुचिआतम बोध न होत कथा न
कथोही ५६६॥छंद॥ माया जगत अपार देखिमत्त जो सबको
भरमातीहै। काहुइ सुथल सुचित्त नहिं हेरों दुविधा ज्ञाननशा-
तीहै॥ सतसंगतित्ते न्यारे होतें बिषयक बानि सुहातीहै। मंग-
ल जान ठगिनि ठग नाहिन अपना बदन चुरातीहै ५६७ सेवा
करै अर्थकोपावै श्रद्धाधर्म बढ़ावैजू॥ तपफल सकल कामनापूजै
भक्ति मोक्ष दरशावैजू। चारोक्रिया ज्ञानगत बुधजनशोभा सुथ-
लनपावैजू॥ ज्यों मंगल सुन्दरी नाकबिनु सदा निरादर भावैजू
५६८ ज्ञानी जिज्ञासू अर्थार्थी आरतनाम कहावैजू।सुजनचारि
ये प्रभुपद सेवक त्रिधावेद भरमावैजू॥ ज्ञान कर्मऔहै उपासना
जिततित जेहितेहिभावैजू। मंगलआतमज्ञान बिबर्जित निजपद
कोक्यों पावैजू ५६९ श्रुति बिशिष्ट अद्वैत द्वैतबदि पुनि अद्वैत
लखावैजू। मुक्त मुमुक्षु बिषयरत त्रैबिधि श्रोता सुनि हर्षावैजू॥
तीनोंकी यकभाव बिलोकनि सो जेहिकेमन आवैजू। मंगलजीव
न मुक्त भवस्थल सोई स्वथल सिधावैजू ६००॥सवैया॥ आपनि
भूल मिटाय सकैनहिं औरनकी कस बुद्धि सुधारै। आपुहिसूरुख
तूमन देखिय रैनि दिवाकर कौनु निहारै॥मानहि त्यागिमिटा-
य अहंपद क्यों निजआतम कोन बिचारै। मंगल यौंबहु लोगभ्रमे
बिनु ज्ञानन श्री हरिधाम बिहारै ६०१ आपनिबूझ भली मन
भावत आनकिबूझ गुणे सउपाधी। ज्ञान कथे न सुने द्वितियेकि

रहै बिपरीत कुसाधन साधी ॥ बाणिगहे निर्बाणकि मारग धाइ चलै जो पतालकि काधी। मंगल साँचु कहावत एकहै आपनि और जहांनकि आधो ६०२ मैं सतमारगमें बिचरों सब मेरेचलैं सतमारग धाई ।तू अभिमान भरो जनि तोरहु जात कुवादलखे बहु धाई ॥ मैंअरु मोर जोतैं अरुतोर गुणै श्रुतिरूप सोहै भ्रम ताई । मंगल याहि निवारत जो जन जीवनमुक्त सो भूतल भाई ६०३ गंगऔ कर्म बिनाशिनि को भ्रम औमरु मालव की दुवितार्इ। ब्राह्मण अंत्यज उत्तम धाकर जीवन मृत्यु अमी बिष पाई ॥ देव अदेव गुणी अगुणी पुनि शौच अशौच किभूल मिटाई।मंगल एकहिभाव बिलोकत जीवनमुक्त महीतल भाई ६०४ उत्तमज्ञानगहे प्रभुसेवत वंचकता न लगावल वेढ़ो। आतममें लवलीन सदातप साधन चोर कुकर्म नवेढ़ो ॥ काहुके बैर सनेहन बंधित दंभिकहै तिनको ठग डेढ़ो। मंगल साँचु कहावत हैयह नाचि नआवत आँगन टेढ़ो६०५एकबिमूढ़ कहैं हम पंडित धर्म निरेश्वरको दरशावै। एक अपार बखानत कालहि उत्पति इस्थिति नाश स्वभावै। दोउनमें नसुज्ञान बिलोकियजो निरधारिसुबस्तु बतावै।मंगल सत्य सदा परमातम जो सबठामनदृष्ठिहि आवै ६०६ जानि परै न बिना गुरु अद्भुत देखि सुनीन कबो निज आखी। क्यों दृढ़ता मतिमें निबसै दुबिधा बहुलोगनग्रंथ न भाखी॥ सारगहै तजिभूल असारहि जाकरहै निगमागम साखी।मंगल शुद्ध सतोगुण आवत बुद्धि रहै परमातँद चाखी६०७ सिंधुकहेते अगाध लगै अरु बिंदु बदे अतिही लघुताई। सिंधुन बिंदु अहै जलसो प्रभु दोउनमें इमि बाणि सुनाई॥ताहिबिचारि सुजानरहेचुपि ईश्वर जीव दुभाव मिटाई। मंगलको लघुदीरघ बूझत आनको आन बिलोकि लजाई ६०८ सिंधुरज्यों अतिथूल कलेवर पैबहु जानत हौं लघुदेही। तुच्छ पिपील गहेसुख अन्नहि बूझतहौं सबतेबढ़ि केही॥ज्यों गजहेरि पिपील भई बड़औ करि सो लघुते लघु तेही। मंगल जीव दुवीयक भावहि देतलगो सुधि

आपुन एही ६०६ ॥विष्णुपद ॥ प्रभुमति कहते नाहिं बनै । जो कहिये तो हृदय नहिं भासै ज्ञानी मूढ़ गनै । हैसबमेंअरु काहुमेंनाहिन ऐसी बेद भनै १ जड़वत कहेलगत चैतनता चैतनजड़ि सनै । रूप बखान अरूपहु आवत दुबिधा रहत मनै २ कहिय अकर्त्ता हैपुनि कर्त्ता चौदह पुर अरनै । पालक लिखौं सँहारक सोई क्यों यकता न ठनै ३ यह निरधार करनहित संतो मुनि जनथके घनै । मंगलसी किमि बरणि बतावै माया तोरि तिनै ६१० यहुमन बूझभये भ्रम त्यागै । तजि ब्रिंगता बिषय माया की स्वबश ध्यानमें लागै ॥ जोपै जाय कतहुं बिषयनढिग तौन करै अनुरागै ।दुष्टनके सँग बसै रैनिदिन पैन दुष्टता पागै॥मंगल निज आतम नित ध्यावै चीन्है हंस न कागै ६११ जनमनशुद्ध सतोगुण आया। जोभ्रम रहै ब्रह्म मायाको जीवईश त्रिरूपा॥ सोअब एक भावसों देखत सकल एकही काया १ त्रिगुणनाम बिधि हरि हर भाषत सर्गस्थिति लय कर्मा ॥ सो त्रिभांतिनहिँ एकब्रह्म है तीनि नामसों गाया२ स्वर्ग नर्क अपवर्ग बासकी आश सबैजग बांधा ॥ बूझत जीव शुद्धचित आतम कौनु त्रिधागति धाया ३ आगम बेद उपनिषद देखौ क्याकहि जीवहि गावै ॥ मंगल बोधभया गुरुपाये भ्रममत दूरि बहाया ६१२ ॥सवैया ॥ केतिक ज्ञान लिखाय थके भेखि केतिक न्याय गुणी समुझावै॥ केतिकवस्तु प्रत्यक्ष बताय पदारथ ज्ञानकि सिद्धि लखावैं॥केतिकतीरथकी चलिजाय न्हवायके मुक्ति सुपंथ बतावै।मंगल ध्याये बिना निज आतम कोटिकरै मन हाथन आवै ६१३ याभवके सबकाम तजै प्रियबंधु सुता सुतनारि दुरावै।नग्नरहै तजिलाज सबैजित भोजन हाथलगै तित खावै ॥नित्य विवेक अचारलिये रहै औबतमेंनिज जीव दुखावै। मंगल ध्यायेबिना निजआतम कोटिकरै मनहाथ न आवै ६१४ जाय सुपंथमें मुण्ड मुंडायअ- नाष दयोदिधि बायुमलोसों। बौध्रकि जैनकि शैवकि न्यायकि सांख्यक मिष्णु बिचारक जोसों ॥मुक्ति पदारथ खोजिमरै नतरै

चकई भवडोरि फसोसो । मंगल आतम बोधबिना अध ऊरधके मगमेंनिबसोसो ६१५ बौधनजानत न्यायकथा अरुजैननमानन पैवकि बानी । सांख्यक आदिलगे अपनेमत दूसरमें नहिँबुद्धि समानी ॥जोहठवादि किपद्धति गावत सोन महामुनिउत्तमज्ञानी ।मंगल सार गहै सबको तब बूझत आतमकी गतिप्रानी ६१६ एकरसूल बहत्तरि मिल्लत चारिकिताब कहैं मतचारी । आपसमें बकबादु करैंयक दूसरको बदि काफिर भारी । मानकि बाणि बसै दिलमें निज पाकन पाक दुयोमति धारी । मंगलएक खुदाय सहीकृतबादु इतैजु प्रवीण अनारी ६१७ दूसरको परमातमहै तजि पावकतेज स्वरूप त्रिलोका ।जासु प्रताप तपैनभमें रबिजीव प्रभाव्यहि चंध त्रिलोका॥तेजप्रकाश जहांलगुहैसबु बेदुज नाश बदैक अधोका । मंगल भूलयसेन सुनैहठ पंथगहेजड़ ज्यों भ्रमि कोका ६१८व्योमहि ब्रह्म बिचारत कौनहु तर्कअपार न सिद्धि दिखाई । चौदहलोक हमौ हरिजू धायि मातु सुरासुर बास लखाई ॥ दृष्टिन आव अनादि अनंत अलीह अरूप अजन्म गनाई । मंगल ब्रह्म द्वितीयन के बूझत ऊसरिकेफल कीट किनाई ६१९कोउ प्रभंजनकी गतिहेरि सुलाय बहोत्तम हिकी सरसाई । मानहि ईश्वर जानत नाहिन खेचर ज्यों नभ त्यागि न जाई ॥ ध्यावत गावत मोह बिमंडित कूजत पूजत प्रेम बढ़ाई । मंगल कौनु बुझायसकै बिष और बढ़ै अहि दूध पिलाई ६२० संभव सर्व चराचरको जलयोग बिना नहिँ दृष्टिहि आवै । नीर अपार अखंड अमंडित सिद्ध स्वतंत्र सुजीव दृढ़ावै ॥ पूजतहै जलराशि समोदित आतम सत्यनहीं लखिपावै । मंगल श्वान यथा सिथ चचोरत डाढि दिधि स्यहि त्यागिन धावै ६२१सेवतभानु बिचारि स्वतंत्रित आनँदमें नित साँझ प्रभाता । ब्रह्म द्वितीय न मानत कोटिहु ज्ञान बखानि बुझाइय बाता ॥जानत तीनिहुलोकप्रकाशित हैं रबितेनहिं आन बिभाता । मंगल सूर प्रकाशित जो प्रभु ताहिन बूझत क्यों भ्रमजाता ६२२ जीवन हैधिक आभवमंगल

जोन स्वआतमकी गति जानी। भोग किये पशुलौं बिषयीरस भूप धनी पदबीमति सानी॥ अंत अनेक बिचार बिमोहितदेखि जमै कृत बेद बखानी। स्वर्ग अधो निजकर्म समानहि भोगबहोरि धरोतन आनी ६२३ कोटिन धायमरे नतरे नर कोटिनभूख पियासहि त्यागी। कोटिन मूरति पूजिथके पुनि कोटिन तापि थके जग आगी॥ कोटिन ज्ञान बखानि चुपे अरु कोटिन छन्द कबित्तहि पागी। मंगल ब्रह्मबिचार बिना चित चेतभयो नकबौं बुधि जागी ६२४ ज्ञानवहै जेहि ब्रह्म बिचारिय। ध्यान वहैजेहि बुद्धि सुधारिय। पूजन सोइ चिदानँद राखिहि पूजि सदा परमानंद धारिय॥ इन्द्रिय निग्रह है तप साधन पाठ किधौं अजपा निरधारिय। मंगल शुद्ध सतोगुण सोइहै जाबल मूरति आपुनि हारिय ६२५ निश्चितकीन्ह सबैमत सन्तन सिद्धि पदारथ एक भयोहै। द्वैतअद्वैतबिचारिलियो दृढ़ मारगमें पगु सत्य दयोहै॥ भूलमिटे भ्रम दूरि भयो प्रभुकिपद मेह समोद छयोहै। मंगलहै पुरुषोत्तम सत्य असत्यकि आंखि कहां चितयोहै ६२६ जोअब बूझभई मनमें सोकहेअने नलिखे बनिआवै। गायेबनैन बतायेब नै समुझावत सैनन्नमें नसमावै॥ ज्यों पटहूरस मिश्रितजो रस सोकस पंडित भाखि बतावै। मंगल संत सदागत आतमसोयह भेद सहीलखि पावै ६२७ तोषबिना नछुटै भवदोष बिषयरस में मनधाइ मरैरे॥सत्य असत्य अशुद्धरुशुद्ध न बूझत मूरुखजाइ धरैरे। कोटिउपाय बिधान क्रिया करि भू थकिजाय नकाजसरैरे। मंगल तोषभये दृढ़ता उर बासलहै सतसंग करैरे ६२८ शांति बिहूनन क्रोधकि पावक नाशत कोटि उपायनसौरे। मोह मिटैन सधे तपसा शुचि कर्मनकेन चलै मनजोरे॥ कामकला निवसै उरअंतर खोजत नित्य बिषयसुख कौरे। मंगल शांति भये सुख सम्यक पावतजीव समोद अजौरे ६२९ चित्तसतोगुणि बूझिभये उपजैउर सात्विक ज्ञान अमाया। जाहिलहै चित चेतन बूझत त्यागि दुवौभ्रम पुण्य अदाया॥स्वर्ग अधीनबिचारत

सोजन पाकन पाकलनारि अजाया। मंगल पंथस्वछंद बिहारत सन्तसदा भवमेंलहि काया६३०ज्ञानबिना सतसंग न आवतसंग त्रिभांति सुमारग केरे।श्रीगुरुपुस्तक साधु बतावत जौनरमैं भ्रम दोषनिबेरे ॥सोगुरुता बिभुता थिरता जनपावत सत्य भणैंकबिटेरे। मंगल आनउपायनभूतल बेदकिताब अनेकनहेरे६३१कबित्त। अनघअपार आदि एकन अनादिसब ठामनमें एककी द्वितीयकरि गाइये। रूप औ अरूपदोउ भ्रमहीके भेदभाव सत्य औ असत्यतेन जासुभेद पाइये ॥ केतिक बिचारिगये केतिक बिचारैंआगे केतिक बिचारकृत चित्तचुप लाइये। मंगल कोजानै जोअजान नामभाषियत दुबिधा दुरायताकी लीजै शरणाइये ६३२॥ सवैया ॥ ब्रह्मते बुद्धिभई उत्पन्नबदैं मुनि ज्ञाननिधान प्रबीना॥बुद्धिते तत्त्वरुतत्त्वतेधातु सुधातुते जन्म बनस्पतिलीना ॥ जन्म बनस्पतिते पशुको पशुतेनर औनरते सुरचीना॥ मंगल देवमिल्यो प्रभुमेंयह मारग कुंडल जीवअक्षीना ६३३देवशरीर कुकर्म बिमोहित होतमनुष्य सुबुद्धि अमाना।आतमभूलि पशूनर होवत औपशुतेजो बनस्पति साना॥ होत बनस्पति ते जड़धातु सुधातुते तत्त्वस्वरूप समाना। मंगल तत्त्वते बुद्धिभई बुधितेप्रभु लीन बिलोम बखाना ६३४ ज्ञान कहां मनद्वैत बिमंडित कर्मकहां यदिजीव अनूपा। कौनुउपासक मोह बिबर्जित जापकहां यदि एकस्वरूपा ॥ पाठकहां अनुमानबिचारत पूजनको निरबाध निरूपा। मंगल मुक्तकहां भवबंधित कौनुप्रजा यदिहोइन भूपा ६३५द्वैतकिज्ञान बिहाय बिनाशतकर्म किकूटतजीव बिजाने। कूटउपास्य कित्यागि अमोह छुटैजपधौं कि बिनायक ध्याने॥ पाठकिकूट बिना निरलोभ किपूजन कूटनिरातम ज्ञाने। मंगल बंधन मुक्तिकि कूट अहम्मद संतबिपयरससाने ६३६ सत्यकहां जो असत्यनहीं अरुलोक कहां जो अलोक न गाइय। देवकहां जो अदेव अभासित ज्ञानकहां जो अज्ञान प्रपाइय ॥ वृद्धिकहां जोपै हानिन सज्जन कौनुअसज्जन जोन बताइय। मंगल चित्तबिचारु अरेमन ईशकहांजो अनीश

मिटाइय ६३७ को करतार जो सृष्टिनहीं अरु को भरतार जो दासअभावा। ठाकुरकौनु प्रजाबिनु भावत उज्ज्वल कौनु अनुज्ज्वल थावा॥ कोधनवान जो रंकनहीं अरु सौख्य कितैजोपै दुःख नआवा। मंगल चित्त बिचारु अरेमन ईशकितै बिन जीव कहावा ६३८॥ कवित्त॥मानकौन त्यागै मन दीनताको दूरिगन प्रीतिन प्रतीतिसन संत रूपधारेहै। लोभकोनिवास तन हिये नाहीं ज्ञान बनखोजै प्रतिद्वार धन कंतको बिसारेहै॥तोष नाहीं एकक्षण बेद औ पुराणभण बाधै आन नारिजन दंतकथ्य टारेहै। मंगल प्रवीणबन आननको तुच्छगन कूरथौं बिनोदैरण अब्रदूरि डारेहै ६३९ब्रह्मको बखानै जाहि बेदहून जानै बानिदै निरबानै माह माया बिलबासीहै।ज्ञान गीत गानै औ प्रमाण कोटि आनै झूठीबात अनुमानै द्वैत कायामें बिलासीहै॥ ऊंच नीच जानै हरिदासन पिछानै जोन क्षारदेह सानै छोह छायाथौं बिनासीहै। मंगल नठानै एकभावन समानै और दुःख सुखमानै ताते कैसो थौं उदासीहै ६४०जहांदेखौ तहां एकरूपको बिलासहोत भांति भांति भाषत प्रमाणज्ञान सानीहै। बिबिध किताब ग्रंथ एकभाव सत्यकहै द्वैतनाहीं शून्यबादै बौधजैन बानीहै॥ पंचनकीबात किप्रमाण भूमि स्वर्गलोक एकनर बात तात कौने सत्यमानीहै। मंगलको भासैशून्य एककोन भाव दासै बड़ोभ्रम भासै जाकीक थान कहानीहै ६४१जाको बुद्धिगावै ताको बानिन बतावैजाहि बाणि समुझावै सोनबुद्धिहू प्रमानैहै। काननको काम कहांआंखि करपावै अरु नैननको काज कबै श्रवण बखानैहै॥जाको जौनकाजतौन करत स्वभाव नित्य दूसर न जानै व्यवसावै झूठ ठानैहै। मंगल सुजान संत जांचि देखैं कोटिभांति शून्यको अभाव इहां एकही प्रधानैहै ६४२ एकतन सकल समाज भूमि देखियतनाकहूमें एकरूप तारागण भासैहै। देवगुरु दैत्य गुरु होतन खगेश ग्रूर कीट औ पतंग एक कायामें निवासैहै॥एकभूमि नीरबायु पावक सव्योम हेरु द्वितियन होतपदि मिलित बिलासैहै। मंग

ल सुजान संग जांचिदेखैं बार बार शून्यको अभाव इहां एकही प्रकासैहै ६४३देह बिनु जीवको निवाल कौन भाषिसकै जीव हीन कायाकौन चलत उपायहै। आतप बिहायन प्रकास भानु भाषियत भानुहीन आतप न त्रिपुर लखायहै॥ पितुबिनु सूनुन प्रमाण तन सूनुबिनु पितुहू कहावै ऐसो दुबिधाको भायहै। मंगल सुजान संतजांचि देखैं बारबार तैसे ब्रह्ममाया एकहै तमेंदढ़ा यहै ६४४॥ सवैया॥देवनमें मनसर्व समर्थ जो देवयजै सोलहै मनचीती। दुष्टनमें जड़ता अति देखिय जेनभजैं सुरमोह प्रतीती॥ दानि अभिप्रिय देवफली बिनु पासगये कहँद्रव्य चहीती। मंगलकाम कलानि लिये नित ध्यावत देव बिचय मति जीती ६४५ दीपसुगंधि लिये जलगंग सप्रेम स्वदेवनको मनमोदैं।पाय मनोरथ होत समोदित कोटिकज्ञान सुनैन बिनोदैं॥ ज्योंरसनी रस एकन होवत त्यों इतकाम अकाम प्रमोदैं। मंगल एक गहे सुख होवत दोउनमें किमि जाय दुकोदैं ६४६मुक्तिदई प्रभुकोटिनको बिनु युक्ति बदैं कबि कोबिद ज्ञानी। स्वर्ग निवासअपारनको तुमदीन्ह कृपालु सबीजन जानी॥केतिक गोपुरमेंबिलसेबहु सत्य सुलोक बसे बरप्रानी। मंगल कोनहिं नर्क बिहाय बतायसको कहुंआरंगपानी ६४७ पुण्य प्रभाव तरे कितने नर केतिक मोक्षभये ब्रतधारी।पूजन पाठनसों अवमेढि भयेबहुधा जन स्वर्ग बिहारी॥योग बियोग लियेभव केतिक जायसमीप बसे सुखकारी। मंगलकेशिर पातक गाठरि क्योंतुम तारिसको गिरिधारी ६४८ जाकर पूरब पुण्य प्रकाश कृपाकर ताकहँतारि दयोहै।बाजेहि कर्मकिये भव उत्तम ताफल उच्च अवासलयोहै॥ पूरब पुण्य नजीवतके कृत जन्म कुमारग में बितयो है। मंगल कोकत तारिसकौप्रभु याभ्रम में जियशोच भयोहै ६४९ कौन दुराव अहे तुमसों प्रभु जानतहौ मनकी सब मेरी। आठहु यामन भावत हैजग पाप बिहाय त्रिपथमति घेरी॥ ज्ञान बिराग बिबेक नभावत कामकथा किउछाह घनेरी।मंगल कोनगलीजग

मोषकि आनिपरी शरणागत तेरी ६५० कर्मकिये जगनर्कनिवा सके क्यों अब होउ सुधामबसेरी। निंदक पंथ गही निशिबास र त्यागि सुबाट जो मुक्तिकि ढेरी॥ नीच प्रसंग नसाधु समाज बिबाद किये बहु ज्ञान निबेरी। मंगल को न गली जग मोषकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५१ जात जितै तित मोह पयोनिधि काम समीर कुबीचि करेरी। मुक्ति उड़ो भरमैन रहैथिर खेवक ज्ञानथको बुधि प्रेरी॥ कर्म बिबाद उड़े पतवार सहाय नकोउ कहौं जेहिटेरी। मंगल कोनगली जग मोषकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५२ शुद्ध स्वभाव नहोत स्वधी इत कर्म उपायनसों चितहेरी। जो समुझावत सोनगुणै मन आनकिआन बदैबहुतेरी॥सत्य असत्य गुणानिकरै चुप औकतहूं बरणै खल टेरी। मंगल कौनगली जगमोषकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५३ जोजन जानि दयाकरिकै करशीश धरौ पकरौ भुजमेरी॥ तौ श्रमहीन तजौं भवसागर जाय नशाय अधोरध फेरी। नातरु योंहि भ्रमों भव बीथिन संसृत में दुखसों भटभेरी॥ मंगल को न गली जग मोष किआनि परो शरणागत तेरी ६५४ कोउतरैकरि तीरथसेव-नकोउतरै ब्रत साधन साधी। कोउतरै करिनेम अचारनि कोउ तरै मनकीहत व्याधी॥ कोउतरै पढ़ि वेदपुराणनि कोउतरैप्रभु नाम अराधी। मंगल कैसेतरै करुणाकर कीन्ह सुकर्म नहीं क्षण आधी ६५५ ज्ञानगुणे तरिगे कितनेकरि योग समाधि तरेकितने हैं। तापसरूप बनायतरे बहु गायतरे बहुनाम सनेहैं॥पाठकिये बहु मोचिगये करिजाप अनेक स्वमुक्त भनेहैं। मंगल कैसे मुचै करुणाकर एकहुभांति न कर्म बनेहैं ६५६ संत समाजहि सेइमुचे बहु पूजत मूरति मुक्त भयेहैं। मंत्रप्रभाव लही बहु मुक्ति अगूढ़ गुणभ्रमरूप हयेहैं॥ बाण अबाण बिबेकमुचे बहुध्यान अखंड शिवै चितयेहैं। मंगल कैसेतरै करुणाकर एकहुअंगन शुद्धभयेहैं ६५७ बंधनकी यक झूठबखानि स्वछन्द प्रमाणत शुद्धकहावै। शून्य बिचारि बिमोचत हैं यक आपन ग्रंथ प्रसिद्ध सुनावै॥

एकन मूरति तीरथ मानत व्यापक जानि भलीगति पावै। मंगल कैसे तरै करुणाकर एकहुभांतिन जीवदृढ़ावै ६५८ पण्डितके बल बुद्धि प्रसिद्ध कोहै कबिकोबल बाणि सुहावनि। गौरवको गुरुकेबल देखिय शिष्य सुमंत्र लियेदृढ़ भावनि॥ ज्ञानबली धनवानबली बलवान बली पदउच्च प्रभावनि। मंगल कौनुभरो सकरै प्रभुदेहु बताय परीमन तावनि ६५९ बिष्णुपद॥सबबिधि बिषयक मोमन स्वामी। यत्नअनेक किये याभवतल होहुंनाथ अनुगामी॥पैन सुदृढ़ मनभयो कृपानिधि हौतुम अंतरयामी१ कादुराव तुमसन करुणाकर मोह मलिनहौं कामी। कियेअपार कुकर्म देहधरि अजामीलको नामी २सोअब समुझि होत मन बावर भूतकाल गति बामी॥ क्यों निर्बाह होइगो हरिजू कूर भये संग्रामी ३ अखिल ज्ञान बिज्ञान निरस रस बूझिधाम पर धामी। मंगल शरणगही प्रभुतेरी तारिय द्विजवर गामी ६६० आन कौनकी शरण गहौंहौं॥ देखिन परत द्वितिय दायानिधि दीनपाल पुरतीनों। निज स्वारथ रत सकल बेदबद फिरि कस सुगम लहौंहौं १ केतिक जन्म बूझ बिनु भटक्यो सेवतचरण थकानों। हारिमानि तुवपदरज बन्दी अब अघओघ दहौंहौं २ जो भयरहै नरक सुरपुरको सोमनते बिसरायो॥बंधन मुक्तिदुवौ करुणानिधि तुवपद तजिन चहौंहौं ३ दुख सुखको व्यवहारदेह धरि नरक स्वर्ग स्वइगायो॥मंगल प्रभुपदरजशिर लावत कोमुद बरणि कहौंहौं ६६१ जानिपरी तुमहीं जनतारण। अबलगि रहै महाभ्रम चितमें बिबिध ग्रंथ मतिलागी॥ सोभ्रम मिट्यो भयो तवपद रज नेह समोद अकारण १ दास बिपति नाशकनद्वितिय प्रभु त्यागि तुमहिं तिहुंलोकनि॥ बासवकोप जानि रक्ष्यो ब्रज गिरिकीन्ह्यो नख धारण २लक्षधाम सुतअंध बिरचि तहँपांडुसुत न दियबासा॥ पावक प्रबल अर्द्धनिशि प्रज्वलित तुवप्रभु कीन्ह निवारण ३ द्रुपदसुता लज्जा गोपिनप्रण तुम राख्यो बनवारी॥ मंगल शरण गही करुणाकर अब करिये उद्धारण ६६२ आपन

मोह कहौं अब कासन ॥ बेदपुरान कुरान ग्रंथबहु रचेगुणिन गुणिहीमें ॥त्यहि मारग बिचरत सुख भवतल होत मोद श्रुचि दासन १ जो बिपरीत चलत निजपथते तजि मर्याद पुरानी॥ त्यहि बिलोकि जगकरत बतकही यहजड़ धर्म बिनाशन२जित तित अब्र निंदकमत देखिय गहत सकलजन हीते ॥ मिटीमेड़ श्रुति कलिदिखि चारौ युग प्रभाव है तासन ३ प्रथम मोरमन अचल सचलअब सचल अचल पहिंचानो॥ मंगल चुपकि रहौ जनि भाष्यो त्यागि नाम गरुड़ासन ६६३ निजमनकी मनधरौ चुराई ॥गुप्त प्रकट इतदै मत देखिय दूनौंकी निपुणाई ॥ यक अंतर यक बाहिर हेरत निजनिज बूझ बड़ाई १ तिमि निर्गुण सरगुणकी गणना यथा अग्नि युगरूपा॥एकद्रव्य यक काष्ठान्तर है क्योंबड़ छोट लखाई२ कष्टसहित यकमिलत सुलभही प्रकटगुप्त मिलिजाई ॥ सन्त सुजान ज्ञान मूरतिजे ते समुझैं चित लाई ३अगुण सगुण तनजीव कथाहै यकबिनु द्वितिय कोजानै॥ मंगल यहिकारण तनुधरिकै भजिय सदा यदुराई ६६४ पाल्यो काहिन सेवक जानी ॥जिनहिं देखि खिंव थलतजि भागे जानि गोत्रबधकारी ॥ समरभूमि तिनकी रक्षा हित प्रणत्याग्यो रुचि मानी १भिक्षा द्वारदेत कोउनाहीं द्विज व्याकुलयुत नारी ॥भुज भरिभेंटि दई संपति त्यहि गिरान सकत बखानी २ मगधनाथ गृह भूमिपाल गण बन्दि परे दुखरूपी ॥ ते तुमहीं मोचे लखि अबमय जरासन्ध खलभानी ३यहि प्रकार अगणित जनभवतल पाले पालत पालौ ॥मंगल दीन शरणतव मोहन हरिय बिपति सुखदानी ६६५ अबको आन भजौं गिरिधारी ॥ जानिबूझि जन बल्लभ श्रीप्रभु बनौंमूढ़ अबिचारी॥साहबत्यागिगहौं सेवकपदकौ नकहै भ्रमभारी१तजिमंदारगहौं बदरीतरु कामदुधा तजिआंकै ॥ गंगत्यागि पुष्करी पानजल ज्ञानकि बुद्धि क्षयकारी २ कामक्रोध मदलोभ मोहवश रहौं सदा भ्रमनाहीं ॥सुगति पंथकोउ दृष्टिन आवत अबहौं शरण तुम्हारी ३ जो जी रुचैकरो करुणामय हौ

स्वतंत्र सबलायक ॥ मंगलके दुख दोष नाशिये समरथ आपमुरा-
री ६६६ करि बहुदंभ थकी मति मेरी ॥ काहूविधिन भयोथिर
मनप्रभु विषयक खल अघकारी ॥ प्रतिक्षण बामपंथ जड़धाव
त निडर इंद्रियन प्रेरी १ शास्त्रबिहित मग गहतन जड़मतिकृत
बिपरीत पसारे ॥ यद्यपि सीख दई सुन्दरहौं होतन सबलबसे
री २ मोह निशा सोवत सुख अपने जानि मोहिं बकवादी ॥
बिषयभोग सुनि उठत मुदितप्रभु किते ज्ञानकीढेरी २ ब्रततीर-
थ संयम जपपूजन पाठध्यान बशनाहीं । मंगलं बिकल हरिय
दुख मोहन परो शरण प्रभु तेरी ६६७ ॥ सवैया ॥ काल अनन्त
भ्रम्योबहु पंथबिचार अनेकन भांति बिचारे। जोजन जानत सो
तस भाषत अर्थ निरर्थ समर्थ बिसारे॥बूझतहौं मनतोष नआव-
त आनकि आनक्रिया चितधारे। मंगल त्यागिसबै मग मोहन हौं
शरणागत द्वार तुम्हारे ६६८ दृष्टि पसारि लखे सबमारग शंकित
सर्व अशंकन कोई । क्यों भटकौं फिरि भूमि वृथा जित लाभ
नहीं तित हानिहि होई॥मुक्त गृहस्थ उदासिनमें मतकी दुबिधा
बुधि सत्य बिगोई । मंगल भाषि थको बहुज्ञान परो प्रभुद्वार
द्वयीमति खोई ६६९ पूजत देवन बैठिके एकखड़े यक पूजत
मोहग्रसी मति । बैठिउठैं यक नाचत गावत धूप जलाय स्वछंद
कथैं अति ।दैबलिभाग रिझावत एक करैं ब्रतयोग सुयोग लगीर-
ति ।मंगल मौनित स्वांग बिलोकि चहौंसोकरौ प्रभुहौं शरणागति
६७० काहुको होइरहै भव चाइकै मूढ़कहै कवि कोबिद गावै ।
सो मनबूझि बिबेक किआँखि लखे सबपै नहिंदृष्टि समावै ॥
त्यागितुम्हैं करुणाकर नाथ द्वितीयन रक्षक मोमन भावै। मंगल
भूल मिटायपरो तव द्वारकरौ जोतुम्हैं बनिआवै ६७१ कीरयथा
ललनी लटको कपि अन्नलिये करबन्दि परोहै । भूकत श्वानकि
दर्पण मंदिर मत्स्य किकांट सलोभ धरोहै ॥ त्यों इतधर्म लिये
नर भ्रामिक छूटन को न उपाय करोहै । मंगल त्यागि सबै दुबिधा
अब आपहि आपकेद्वार परोहै ६७२ ज्ञानि कहा समुझावत ज्ञान

नध्यानि बुझावत ध्यान नहींहै। तर्ककिये कबभासत चित्तकबि-त्तसबित्त प्रतिष्ठ महीहै ॥अंतसमय जपपाठन पूजन केवलज्ञान कि वृत्तिकहीहै। मंगल तौनबनै अपनी यहिते प्रभुकी शरणाइ गहीहै ६७३ बालक नारि हितू पितुमातु महीधन धाम सबै अप नोहै। त्यागि सुधा हरिनाम बिषयरत सेवत मृत्युकि ज्ञान घनो है ॥ अंत जितो परिवार सकाय बिहाय स्वधर्म किधौं सपनोहै। मंगल शोचियहै मनमोहन संतन रंक अरंकबनोहै६७४ मोहमते कुमतो सुमतो सबकाम मते तपसा सब फीकी। क्रोधमते भ्रम भ्रांति स्वभावजु लोभमते कबितालघु हीकी ॥ गर्वमते सबकर्म अकारथहै पचकूटफँसी मति जीकी। मंगल ताते इतैन बनैकछु मोहनकी शरणागति नीकी६७५पक्षमते नहिंज्ञान बिभातिअप-क्षमते नाहिं धर्म सोहावै।भोगमते नतजै मन आधि अभोगमते बुधिकी रुचिजावै॥ आनमते अपनीमति नाशत आपुमते श्रुति निंदक गावै। मंगल सत्यबनै तबहीं जबहीं प्रभुकी शरणागति आवै ६७६॥महाभुजंगप्रयात॥महामोहमें बुद्धिहै नित्यही लीन कैसेबनै श्यामको ध्यान जीमें। बँध्यो लोभके दामज्यों कीट कैधाम मोचै यथा सोनहै ज्ञानहीमें॥ जरैंक्रोधकी आँचनाचैवृथा नाच जामेंबचै सांच नास्यान धीमें। इतैकाम मात्सर्य धौंकाल कूटै कितैभागिये ठौरहै ज्ञानसीमें ६७७ कहीं काहि पाखंडकी वृत्ति जीमें निवासै नभासै कृपासिंधु ज्ञानै। कथौं काव्य बिज्ञान श्रद्धानहीं चित्तसंताप कामादिको सत्यध्यानै॥ नहींमोक्ष रथ्या कहूं दृष्टिआवै जितैहौं चलाऊं सुधी शुद्ध जानै।सबै आशकोत्यागि हौं पाहिश्री श्याम मो योगजो होइसो देहुथानै६७८ कहाकीजि येजाइये धाइको आश कोऊ नहीं मुक्तिको पंथ देखौं। घड़ोदंभ आचारहेरों निराचार अद्यापि निर्मोहनो ग्रंथलेखौं।बनैसोन मो सों जुहै वेदगाये पुराणादि भाषा सुकर्मौ बिशेखौं। यहैशोचकेत्रा हिहै पाहिश्री श्यामहौं दूसरो मुक्तिदाता नपेखौं६७९ तुम्हींसत्य संज्ञातुम्हीं सत्यबाणी तुम्हीं अव्ययी आदिअंतावसानी। तुम्हीं

देवदाता तुम्हींवेदधाता तुम्हींसर्वत्राता अनादी सबानी॥तुम्हीं
कौतुकीयोद्धयो एककाया तुम्हीं दिग्गजौ दैत्य मानापमानी। न
हौंदूसरो चारिषष्ठासहेरौंबदौंश्याम श्रीश्यामज्ञानानुमानी ६८०
तुम्हैंऔहमैं कौनुएकत्वभासै तुम्हैंऔहमैं द्वैतको मूढ़गावै। तुम्हैं
औहमैं स्वामिऔ भृत्यदेखै तुम्हैं औहमैं देवता पुंसभावै॥ तुम्हैं
औहमैंको अनीशीशजानैं तुम्हैंऔहमैं बूझिआपै समावै। तुम्हैंऔ
हमैं जोनजाने महाराज सोईमहामूढ़ द्वैपंथधावै ६८१ तुम्हैंऔ
हमैं गाइके बोधपावै तुम्हैंऔहमैं ध्यायभेटे दुभावै। तुम्हैंऔहमैं
पूजिके जन्महारे तुम्हैंऔहमैं यांचिदारिद्रदावै॥तुम्हैंऔहमैं वंदि
वन्दैनआनै तुम्हैंऔहमैं एकहीचित्तलावै। तुम्हैंऔहमैं जोनजानै
महाराज सोई महामूढ़ द्वैपंथधावै ६८२ तुम्हैंऔहमैं बूझतैद्वैत
नाशै तुम्हैंऔहमैं शोचतैद्वैतआवै। तुम्हैंऔहमैं सत्यऔ झूठजानै
तुम्हैंऔहमैं धन्यबाणी सुनावै॥ तुम्हैंऔहमैं एकहीरूपदेखै तुम्हैं
स्वामिजू जोहमैंत्यागिगावै। वहैसंतज्ञानी गुणीब्रह्मध्यानी नतौ
मूढ़भूलौ दुवौपंथधावै ६८३ करैजोई तूनाथ सोईभलीगाथ को
ठैनहीं साथमाया बसेरो। परोद्वारतेरे म जानों द्वयीभाव याचौं
न दूजो सदादासतेरो॥ इहां औउहां आशतेरी दयासिंधु पापी
बड़ोहौं किधौंमोहचेरो। बदौंदीनबानी सुनो श्यामश्यामा गहौ
बांहमेरी रहैमान मेरो ६८४ अहौ नाथतारे कितेतारिहौ सांचु
मोकौं लखेक्यौंगही मौनआनो। बड़ोभिक्षुहट्ठी टरौंगानटारो
सुभिक्षालहौं जोकितेधा बखानी॥ नतौभी तजौं द्वाररैहौं परो
आरिबाढ़ो सुतैका करोगे अमानी। यहैशोचिके पोषिये सूनुश्री
श्यामदोजै बसेरो निजैराजधानी ६८५॥ दोहा॥ समरथ सब
विधि नाथतुम भाषत वेदकिताब॥ मंगलको दुखदारिये अज्ञन
सहैनीताब ६८६ जयश्रीगुरुजयश्यामजू जयतिसन्तछलहीन॥
जयतिसारबाणीकथन जयजनहरिपदलीन ६८७ उक्तियुक्ति करि
सप्तमत सारकहा वितलाय॥ मिलितलातहू विबुधजन बूझिहि
बाखि सुभाय ६८८ निजमत परमतबहुमतो पक्ष अपक्ष बखा-

न ॥ शिक्षामत सर्व्वांगयुत कियेसात परमान ६८६ समुझिसप्त मत संतजन बूझैंसहितविवेक ॥ बूझभये सरबांगकी तजैवादि- नीटेक ६९० मूढ़पढ़ै समुझै नहीं निंदककरै बिचार। कीमति गुणजाने बिना ज्योंमणितजै गवाँर ६९१ आतमबादी ब्रह्मवि- द विज्ञानी जोप्रवीन ॥सोसमुझैगो मुदितमन मणिजौहरि कब दीन ६९२ सत्यबस्तु औ सत्यमत सत्यरूप सतकाय ॥ क्यों समुझै मायाग्रसित कर्मबशी भवआय ६९३ गोपुरमें प्रभुचरण परि जीवकृतारथ होत ॥ इहांआय श्रीश्यामपद पावत परम उदोत ६९४ अपनी करणी सबतरै हरिकरणी संसार ॥ मंगल यहजानेबिना मायावश यमद्वार ६९५ जोअपनीमति मोहम- य औसतसंग बिहीन ॥ तौ न बोधनी गाइये रहैभवस्थल दी- न ६९६ राजाराम सुनामशुभ श्रीबासी कायस्थ ॥ बसतग्राम सरहीसदा निजमत कायासुस्थ ६९७ बुध गणेश तिनके तनय हरिसेवकत्रयकाल ॥ तिनकेसुत निजमतसदृढ़ भये बिहारीला- ल ६९८ महा शुद्धमति छलरहित तिनतन बकसीराम ॥ तिन को बालक मूढ़मति हौं मंगल ममनाम ६९९ कियेकाब्य बहु हरिकथा ज्ञानमार्ग बिस्तारि ॥ बोधभये यह सप्तमत बरनो सु- मन बिचारि ७०० ॥

महिगुणमयखगभूमियुत संवतआश्विनमास।
प्रतिपदशुक्लावाररवि पूरणग्रन्थनिवास ७०१ ॥

इतिश्रीमत्समस्तअज्ञानतिमिरसूरप्रकाशिकासर्वसिद्धान्त सप्तशतिकामंगलदासविरचितासमाप्ता ॥ १ ॥

मुंशीनवलकिशोरके छापेखाने मुक़ाम लखनऊमें छपी
जून सन् १८८६ ई०॥

छोड़ने का फल, प्रीति, मान, बड़ाई के फल, अहंकार भ्रम और छलके बुरेफल, त्यागका बर्णन, सन्तोष, भय, आशा, निर्धनता, वैराग्यबिचार, प्रेम, नियम के फल ऐसेही अनेक विषय इसीमोक्षदायक पुस्तकमेंहैं ॥

बीजककबीरदाससटीक

जिसमें आदिमंगल, रमैनी, शब्द, ककहरा, वसन्त, चौतीसी, साखी इत्यादि अनेक दुःखी जीवों के उपकारक योग और उपासनादि मतका प्रकाश और श्रीरामचन्द्रजी के स्वरूप का ज्ञान है इसमें टीका महाराजाधिराज रीवां राज्याधिपति श्री १०८ विश्वनाथ वैकुण्ठवासीकी है यह अपूर्व पुस्तक भी युगलानन्यशरणजी के स्थानापन्न उन्हीं के पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीजानकी वरशरणजी के द्वारा व परिश्रम से प्राप्त हुई थी ॥

ब्रह्मप्रकाश

भगवत्प्रसाद रचित जिसमें बैराग्य, पुरुषार्थ, त्रिगुणयोग, उत्पत्ति चित्तत्रिपुटी पांचों अवस्था संक्षेपसे वर्णनकीगई है ॥

आनन्दामृतवर्षिणी

आनन्दगिरिरचित यहपुस्तक मानों बेदांत का मूलहै इसमें सब बेदांतकी बारीकियां लिखीहैं और हरमंत्रके समझनेके वास्ते कथायें भी साथ हैं ॥

युगलसम्बाद बोधप्रकाश

मुन्शीयुगलकिशोरजी रचित जिसमें योगवाशिष्ठादि बेदांतके ग्रन्थ से अध्यात्मबिचार बेदांतरूप कथनपूर्वक आत्मस्वरूपब्रह्मको लखायाहै ॥

सुन्दरविलास

श्रीपरमहंस सुन्दरदासजी रचित जिसमें ज्ञान, भक्ति, वैराग्यपूर्वक नानाप्रकार के बिचार, तृष्णा छोड़ने के उपाय, धीर्य्य रखना, बिश्वास, नारी की निन्दा, मनका जीतना, नीति बिबेक स्वरूप, विस्मरण की निषेधता, अद्वैत ज्ञान है ॥

सत्यनामविहारवृन्दावन

महात्मा वृन्दाबन जी आचार्यरचित जिसमें मनुष्यकेलिये अतिउपकारक पद्य में उपदेश और उनकी टीका, छहों शास्त्र और अपने

मतका आशय और उनमें अपनी मतिका प्राकट्य और उनके निर्णयके लिये दृष्टांतपूर्वक विचित्र कथा, वेदांतका परिपूर्ण आशय, नाद की उपासनाका परिणाम अंतमें चौपाई, छन्द, ककहरा, बिनती, बारहमासा, होली, रेखता आदि रागों में श्रीमद्भगवद्यश है इसमें सबों का विशेष करके उपकार है॥

भगवद्गीता नवलभाष्य

जोकि सकल निगम, पुराण, स्मृति, सांख्यादि का सारभूत परमरहस्य है जिसको फ़र्रुख़ाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी ने गीता भाष्यानुसार संस्कृतसे देश भाषा में रचना किया जिसमें भगवद्गीता का मूलश्लोक उसके नीचे संस्कृत शंकरभाष्य तत्पश्चात् आनंदगिरि और श्रीधरस्वामि कृत टीका और सब से पीछे शंकरभाष्य का भाषानुवाद नवलभाष्य नाम से वर्णित है-इस पुस्तक को जिसने अवलोकन किया है अवश्यही उसने जानली है यह पुस्तक देखने ही के योग्य है॥

—*—

इश्तिहार॥

—*—